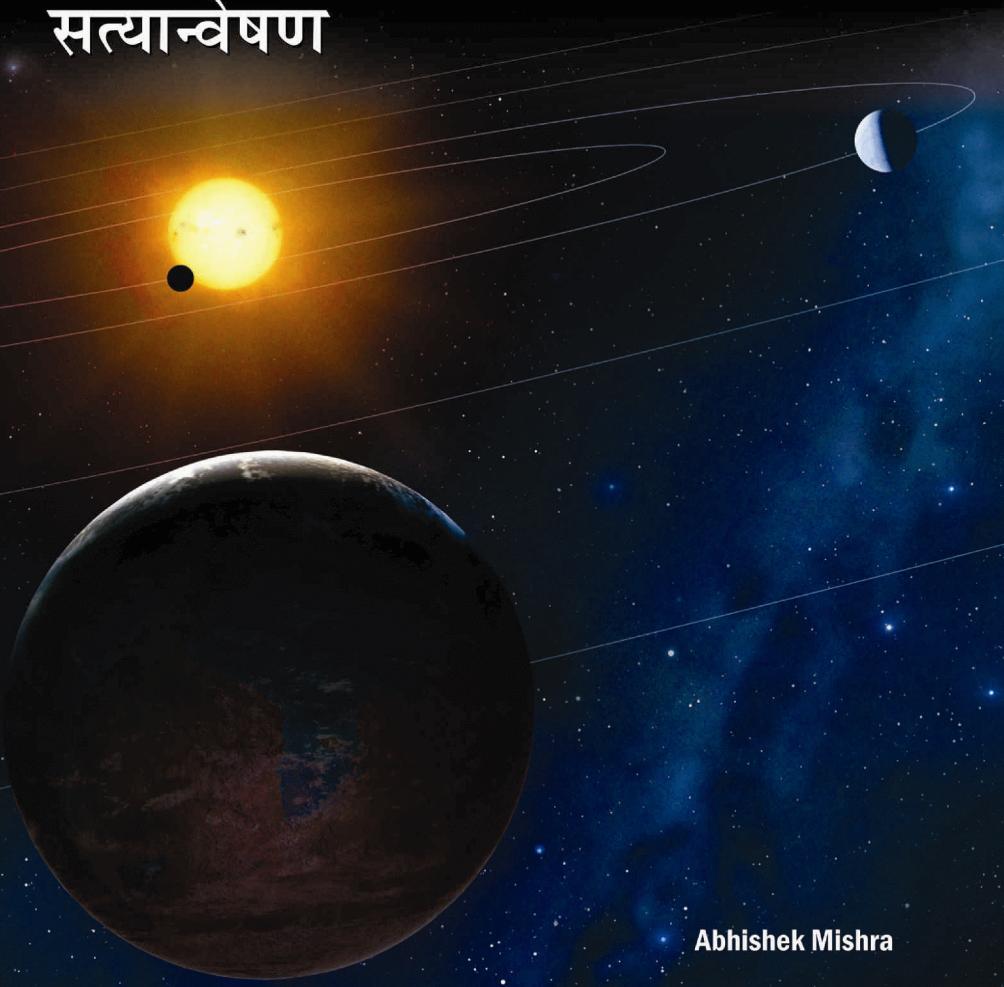


“काल-सूत्राभिषेकम्”

Kaal-Sutrabhishekam

Know the
TRUTH

सत्यान्वेषण



Abhishek Mishra



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!



KAPWING



इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप ॥२॥
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥३॥

भगवान् श्री कृष्ण

“काल-सूत्राभिषेकम्”

Kaal-Sutrabhishekam

अभिषेक मिश्र (शोधकर्ता)

Comparison between active and access (Kaal-Sutrabhishekam)

Comparison	Popularly accepted	Based on My findings.
Age of Brahma.	100 Years	108 Years
Brahma's Year	50 year lapsed.	51 Year lapsed.
Running Kalp	1st Kalp of 51 year	7th Kalp of 52 year.
Brahma's Prahar	2nd Prahar	1st Prahar
Kaliyug Phase	1st Phase	2nd Phase
Value of 1 Kalp	4320000000 Human Year	1080000000 Human Year
Mahayug	4320000 Year	108000 Year
1 Satyug	1728000 Year	43200 Year
1 Tretayug	1296000 Year	32400 Year
Value of Dwaparyug	864000 Year	21600 Year
Value of Kaliyug	432000 Year	10800 Year
Deva Year	360 Human Year	9 Human Year
Divya Year	1080 Human Year	27 Human Year
Value of Saptrishi	100 x 27 Nakshatra	108 x 27 Nakshatra
Length of a Year	365.25	365.2425944 days
Revolution of Moon	27.32 Days.	27.39319458 Days
Precession cycle	$72 \times 360 = 25920$ year	$60 \times 360 = 21600$
Zero Ayanmansha	21 March 499 AD	20 March 611 AD
Moon to Sun	400 times farther away.	432 times farther away.
Earth to the Moon	Ave Dis 384400 Km	Ave Dis 383328 Km
Light's Speed	300000 Km per second	324000 Km per second
Sun Light Reach Earth	483 Sec light's travels.	480 Sec light's travels.
Value of 100 Yojan	1600 Km	36 Km.
V. Samvat Starts	57 BC	78 BC
S.S Starts	78 AD	57 AD

“काल-सूत्राभिषेकम्”

भगवान श्री कृष्ण की असीम अनुकम्पा से इस ग्रन्थ “काल-सूत्राभिषेकम्” को पूर्ण कर पाया ।

यह पुस्तक एक शोध ग्रन्थ के रूप में प्रस्तुत किया गया है इस ग्रन्थ का नाम मेरे पिता आचार्य अमरेन्द्र मिश्र ने “काल-सूत्राभिषेकम्” रखा है, कल्प/मन्वंतर/महायुग/सप्तर्षि/अयनांश पर किये गए शोध को विचारार्थ रख रहा हूँ, वर्तमान काल में कल्प/मन्वंतर/महायुग/सप्तर्षि/अयनांश पर जितने भी विवरण प्राप्त है, मेरा शोध इनसे पूर्णतः भिन्न है, इस छोटे से ग्रन्थ की कालगणना-पद्धति अद्वितीय एवं स्वतः सिद्ध है, मैंने ऋषि-मुनियों द्वारा रचित शास्त्रों को आधार मानकर उनके कालगणना गणित को मात्र 40 से विभाजित कर कल्प/मन्वंतर/महायुग/सप्तर्षि/अयनांश का सूक्ष्म एवं स्वतः सिद्ध मान प्राप्त किया है ।

कालगणना के इस छोटे से ग्रन्थ को मैंने कल्पारम्भ से आरम्भ किया है, इस ग्रन्थ का स्तम्भ “सप्तर्षि अध्याय” है ।

वर्तमान काल में जो गणित (प्रचलन में) लिया जा रहा है उससे अपने गणित के अंतर को दर्शाने हेतु मैंने कई जगह मेरे शोध शब्द का प्रयोग किया है ।

मैंने अपने शोध के अनुसार ($1800/30 = 60$ गुना $360 = 21600$) अयनांश चक्र का प्रयोग करते हुए 20 मार्च 611 ई को (शुन्य) अयनांश के अनुसार गणना की है ।

ई पूर्व से लेकर ई 611 तक का समस्त शोध मैंने जुलियन कैलेन्डर के अनुसार किया है, जोर्जियन कैलेन्डर के अनुसार नहीं, जोर्जियन कैलेन्डर 15 अक्टूबर 1582 ई से प्रभावी हुआ है ।

20 मार्च 611 ई को (शुन्य) अयनांश (अभिषेक मिश्र अयनांश) के रूप में प्रयोग में लिया जाएगा एवं यह ग्रन्थ “काल-सूत्राभिषेकम्” मार्ग-दर्शक एवं शोध कार्य के लिए स्तम्भ के रूप में स्थापित होगा ऐसा मेरा विश्वास है ।

आभार

आचार्य अमरेन्द्र मिश्र (मेरे पिता) को मार्गदर्शन एवं अमूल्य राय देने के लिए उनको धन्यवाद देता हूँ, माँ एवं पिता के प्रोत्साहन, आशीर्वाद एवं भगवान् श्री कृष्ण की असीम अनुकम्पा से इस ग्रन्थ “काल-सूत्राभिषेकम्” को पूर्ण कर पाया ।

अभिषेक मिश्र (शोधकर्ता)

भाद्रपद शुक्लपक्ष चतुर्दशी (अनन्त चतुर्दशी)

27 सितम्बर 2015 (रविवार)

कलियुग सम्वत् 5005

Abhishek
Mishra



Digitally signed by Abhishek Mishra

DN: cn=Abhishek Mishra gn=Abhishek
Mishra c=India l=IN o=Maa Bhuvaneshwari
Jyotish Kendra ou=Maa Bhuvaneshwari
Jyotish Kendra

e=kaalsutrabhishekam@outlook.com

Reason: I am the author of this document

Location: Hazaribag - Hazaribag (INDIA)

Date: 2015-10-08 10:37+05:30

दो शब्द

श्री अभिषेक मिश्र ने अपना शोध निबंध मुझे मेरे अध्ययन के लिए दिया, आधोपांत पढ़ने के उपरांत मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा की विद्वजन समय-समय पर अपने विचारों को प्रस्तुत कर भावी पीढ़ी के लिए चिन्तन मनन हेतु विषय देते रहे हैं, उसी कड़ी में भारद्वाज गोत्र कुलोदभव शाकद्वीपीय ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न श्री अभिषेक मिश्र को भी प्रभु कृपा वश काव्य-शास्त्र व्यसन प्राप्त हुआ और उन्होंने शास्त्र सम्पत् विधि से गहन चिन्तन मनन करते हुए अपना शोध निबंध परोपकाराय-पुण्याय प्रस्तुत किया है, जो पठनीय, विचारणीय एवं प्रशंसनीय है ।

चूँकि मैं फलित ज्योतिष का विद्यार्थी रहा हूँ, अब तक विद्यार्थी ही हूँ, गणित की वृहत जटिलता से पूर्णरूपेण भिज्ञ नहीं हूँ, विद्वजनों के विचारार्थ छोड़ता हूँ ।

शोध निबंध की सर्व-व्यापी स्वीकृति एवं इनकी शुभ-चेष्टा की सम्पूर्ण सफलता का आकांक्षी हूँ ।

आचार्य अमरेन्द्र मिश्र

“काल-सूत्राभिषेकम्”

भारतीय काल गणना का स्वरूप हमें परम शक्ति को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है ।

ग्रह-नक्षत्र देव-स्वरूप में ब्रह्माण्ड में स्थित हैं, सभी ग्रह-नक्षत्र गुरुत्वाकर्षण की शक्ति से आपस में जुड़े हुए हैं, ब्रह्माण्ड के समस्त सजीव और निर्जीव तत्त्व पर उस शक्ति (गुरुत्वाकर्षण) का प्रभाव पड़ता है, ग्रह-नक्षत्रों से ऊपर परम-शक्ति है, जिसने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है, समस्त ब्रह्माण्ड (अरबों-खरबों ग्रह-नक्षत्र) उस परम शक्ति की अपनी धुरी में रहकर परिक्रमा करते हैं, वह शक्ति लाखों ब्रह्माण्ड के केन्द्र में उर्जा स्वरूप में है, उस शक्ति का ना आदि है ना अन्त है, उस परम शक्ति से उत्पन्न उर्जा के विस्फोट से ग्रह-नक्षत्रों का जन्म हुआ है, वह शक्ति नित्य ग्रह-नक्षत्रों का सर्जन और विसर्जन करती है, उस परम-शक्ति ने ब्रह्माण्ड (ग्रह-नक्षत्रों) की दूरि, गति, आकर एवं दिशा $108 = 360$ डिग्री की संख्या पर निर्धारित की है, जिसका मान 108 से ही आरम्भ होता है एवं 108 में ही समाप्त होता है ।

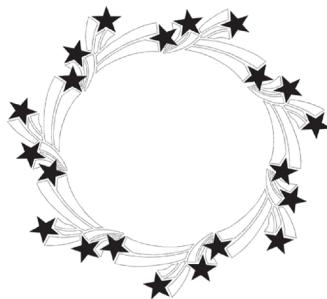


इस अनन्त ब्रह्माण्ड में बालु के कण के आकार की पृथ्वी जिसमें हम रहते हैं इसके आकार, गति, एवं कुछ ग्रहों के साथ दूरि इत्यादि सम्बन्धित गणित को ऋषि-मुनियों द्वारा रचित ग्रंथों के आधार पर सूक्ष्म गणित करने की चेष्टा करता हूँ ।

हमारी पृथ्वी का अपना एक अलग ब्रह्माण्ड है, जिसका केन्द्र सूर्य है, अतः पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति को समझने के लिए पृथ्वी से सूर्य की दूरि,

आकर को समझना आवश्यक है ।

ऋषि-मुनियों द्वारा रचित शास्त्रों का प्राप्त मान एक बहुत रूप में है, परन्तु इसका सटीक मान सूक्ष्म गणित द्वारा प्राप्त होना संभव है, मैंने आठ वर्षों तक ब्रह्माण्ड के गणित को समझने का प्रयास किया, फलस्वरूप मैंने समस्त गणित को 40 के मान से विभाजित कर सटीक मान प्राप्त किया है, जिसे अब हम दिव्य वर्ष/कल्प/मन्वंतर/सप्तर्षि गणित के अनुसार समझते हैं ।



विषय सूचि

01	देव वर्ष एवं दिव्य वर्ष	11-14
02	कल्प	15-16
03	मन्वंतर	17
04	सप्तर्षि	18-23
05	गणना एवं संकल्प	24
06	वर्षारम्भ	25
07	कल्पारम्भ एवं युगारंभ	26
08	1 वर्ष का मान एवं अयनांश गणित	27
09	अभिषेक मिश्र अयनांश	28
10	प्रलय, महाप्रलय	29-31
11	पृथ्वी से सूर्य-चंद्रमा की दूरी	32
12	भूकम्प	33
13	योजन का मान	34-35
14	प्रकाश की गति	36
15	भगवान् श्री राम की जन्म तिथि	37
16	रामसेतु	37
17	भगवान् श्री कृष्ण की जन्म तिथि	38
18	महाभारत युद्धारम्भ से कलियुग आरम्भ तक का विवरण	39
19	महाराज जनमेजय के भूमि दान का विवरण	40
20	कलियुग उदय की तीन तिथियाँ मानी गयी हैं	41
21	भगवान् श्री कृष्ण के जन्म से 300 वर्ष तक के संवत्सर का विवरण	41-42
22	भगवान् श्री गौतम बुद्ध की जन्म तिथि	43
23	महान् ज्योतिषी श्री वराहमिहिर का विवरण	44
24	सप्त्राट विक्रमादित्य की जन्म तिथि	44
25	विक्रम सम्वत एवं शक सम्वत का उचित गणना	44-45
26	महान् गणितज्ञ आर्यभट्ट	46
27	भगवान् महावीर की जन्म तिथि	47

दिव्य वर्ष

श्रीमद्भागवत् के स्कन्ध 12, अध्याय 2 के अनुसार
 दिव्यव्दानां सहस्रान्ते चतुर्थेतु पुनः कृतम् ।
 भविष्यति यदा नृणां मन आत्म प्रकाशकम् ।

अर्थात् चार हज़ार दिव्य वर्ष के पश्चात पुनः सतयुग प्रभाव में आता है

मनुस्मृति एवं अन्य पौराणिक ग्रंथों के अनुसार सतयुग की आयु 4800 देव वर्ष, त्रेतायुग की 3600 देव वर्ष, द्वापरयुग की 2400 देव वर्ष एवं कलियुग की आयु 1200 देव वर्ष है, अतः 1 महायुग का मान 12000 देव वर्ष होता है, $12000 / 3 = 4000$ दिव्य वर्ष होता है ।

मनुस्मृति के व्याख्याकारों ने 360 मानव वर्ष का 1 देव वर्ष एवं 1080 मानव वर्ष को 1 दिव्य वर्ष माना है, अतः विभिन्न ग्रंथों के व्याख्याकारों के अनुसार 1 महायुग का मान 4320000 वर्ष होता है ।

उनके अनुसार

Yuga (Era)	Dev Year	Human Year	Total Age of Yuga	
Cycle of Satyug	4800 Year	x	360	1728000 Years
Cycle of Tretayug	3600 Year	x	360	1296000 Year
Cycle of Dwaparyug	2400 Year	x	360	864000 Year
Cycle of Kaliyug	1200 Year	x	360	432000 Year
Total	12000 Year	x	360	4320000 Years

परन्तु मैं अपने शोध में इससे भिन्न परिणाम पाया हूँ ।

नक्षत्र गणित (अश्विनी से रेवती) के अनुसार मनुष्य की आयु 108 वर्ष की होती है, 9 ग्रह (सूर्य से केतु) को तीन नक्षत्र का स्वामित्व प्राप्त है ।

27 नक्षत्र के 1 चक्र का मान 90 डिग्री होता है, 90 डिग्री में कुल 27 वर्ष होते हैं, इस अनुसार 360 डिग्री में कुल ($90 \times 4 = 360$ डिग्री) 108 वर्ष होते हैं ।

मनुष्य की पूर्णायु में कुल $108 / 27 = 4$ दिव्य वर्ष (नक्षत्र वर्ष) होता है। यहाँ 27 मानव वर्ष = 3 देव वर्ष = 1 दिव्य वर्ष का विवरण दे रहा हूँ ।

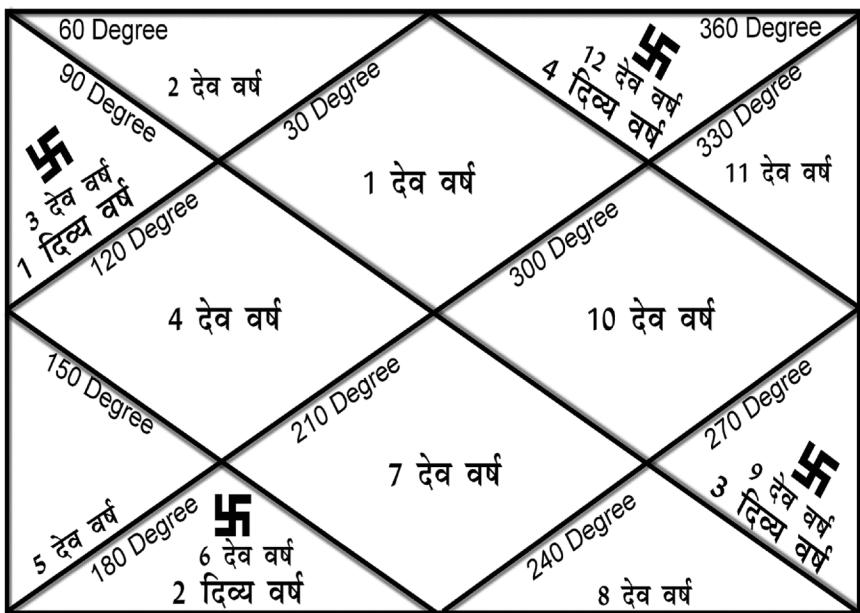
No	Nakshatra	Planet	Degree	Year	(Dev) & Divine Year
1	Ashwini	Ketu	3.33	1	
2	Bharni	Venus	6.66	2	
3	Krittika	Sun	10	3	
4	Rohini	Moon	13.33	4	
5	Mrigshira	Mars	16.66	5	
6	Aadra	Rahu	20	6	
7	Punarvasu	Jupiter	23.33	7	
8	Pushya	Saturn	26.66	8	
9	Ashlesha	Mercuru	30	9	1 (Dev) Year
10	Magha	Ketu	33.33	10	
11	Purvaphalguni	Venus	36.66	11	
12	Uttaraphalguni	Sun	40	12	
13	Hasta	Moon	43.33	13	
14	Chitra	Mars	46.66	14	
15	Swati	Rahu	50	15	
16	Vishakha	Jupiter	53.33	16	
17	Anuradha	Saturn	56.66	17	
18	Jyestha	Mercuru	60	18	2 (Dev) Year
19	Mula	Ketu	63.33	19	
20	Purvashadha	Venus	66.66	20	
21	Uttarashadha	Sun	70	21	
22	Shravana	Moon	73.33	22	
23	Dhanishtha	Mars	76.66	23	
24	Shatbhisha	Rahu	80	24	
25	Purvabhadra	Jupiter	83.33	25	
26	Uttarabhadra	Saturn	86.66	26	
27	Revati	Mercuru	90	27	3 (Dev) = 1 Divine Year

27 मानव वर्ष = 3 देव वर्ष = 1 दिव्य वर्ष होता है ।

अतः 4000 दिव्य वर्ष = 27 गुणा 4000 = 108000 मानव वर्ष = 1 महायुग होता है।

9 ग्रह (सूर्य से केतु) ही देव हैं, इनसे ऊपर दिव्य (नक्षत्र) हैं ।

मनुस्मृति के व्याख्याकारों के अनुसार 1 देव वर्ष का मान 360 मानव वर्ष एवं 1 दिव्य वर्ष का मान 1080 मानव वर्ष होता है परन्तु मेरे शोध के अनुसार 1 देव वर्ष का मान 9 मानव वर्ष एवं 1 दिव्य वर्ष का मान 27 मानव वर्ष होता है ।

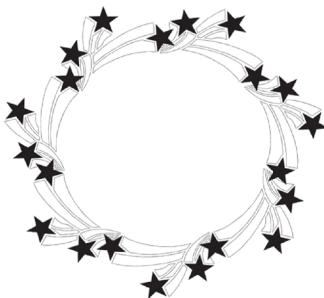


मनुस्मृति एवं अन्य ग्रन्थों के व्याख्याकारों के कालगणना गणित एवं मेरे शोध में 40 गुणा का अंतर है, यह 40 गुणा का अंतर ही कालगणना गणित का सूक्ष्म मान है, मैंने अपना समस्त शोध इसी अंतर के अनुसार किया है, मनुस्मृति एवं अन्य ग्रन्थों में दिए गए कालगणना गणित एक बहुत रूप है, एवं मेरे द्वारा किया गया शोध इसका सूक्ष्म मान है, मैंने ऋषि-मुनियों द्वारा रचित शास्त्रों के कालगणना गणित को मात्र 40 से विभाजित कर सूक्ष्म एवं स्वतः सिद्ध मान प्राप्त किया है ।

मेरे अनुसार

Yuga (Era)	Dev Year	Human Year	Total Age of Yuga
Cycle of Satyug	4800 Year	x 9	43200 Years
Cycle of Tretayug	3600 Year	x 9	32400 Year
Cycle of Dwaparyug	2400 Year	x 9	21600 Year
Cycle of Kaliyug	1200 Year	x 9	10800 Year
Total	12000 Year	x 9	108000 Years

मेरे शोध के अनुसार 12000 देव वर्ष = 4000 दिव्य वर्ष का मान 108000 मानव वर्ष (महायुग) होता है।



कल्प गणित

मेरे शोध के अनुसार एक महायुग का मान 108000 वर्ष होता है, 1000 महायुग का 1 कल्प होता है, अतः 1 कल्प का मान 108000000 वर्ष होता है।

1 Mahayug	1000	=	1 Kalp
108000	x	1000	= 108000000 (Human Year)

1 कल्प = ब्रह्मा जी का 1 दिन, इतने ही वर्ष ब्रह्मा जी की रात्रि होती है,
2 कल्प = अहोरात्र (रात-दिन) ।

1 Kalp (Day)	+	1 Kalp (Night)	=	2 Kalp = 24 Hour.
108000000	+	108000000	=	216000000 (Human Year)

ब्रह्मा जी के 1 अहोरात्र में 2 कल्प होते हैं, अतः 1 वर्ष (360 दिन) में 720 कल्प एवं ब्रह्मा जी की पूर्णायु 108 वर्ष में 77760 कल्प होते हैं ।

24 Hour	Days	Kalp	Total Age of Brahma	Kalp	
2 Kalp	x	360 Days	= 720 Kalp	x 108 Years	= 77760 Kalp

ब्रह्मा जी के अहोरात्र (216000000 वर्ष) के अनुसार 1 वर्ष का मान 77760000000 वर्ष होता है।

2 Kalp	360 Days (1 Year)	1 Year of Brahma
216000000	x 360	= 77760000000 Year

ब्रह्मा जी के 1 वर्ष का मान (77760000000 वर्ष) के अनुसार ब्रह्मा जी की पूर्णायु 108 वर्ष का मान 8398080000000 वर्ष = 77760 कल्प होता है ।

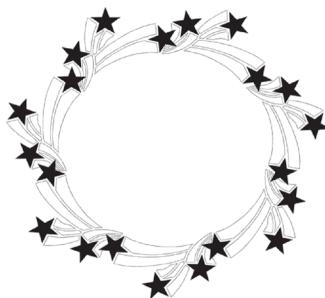
1 Year of Brahma	Year	Total Age of Brahma
77760000000 Year	x 108	= 8398080000000 Human Year

ब्रह्मा जी की पूर्णायु (108 वर्ष) का मान 8398080000000 वर्ष होता है, इस पूर्णायु में 77760 कल्प होते हैं, अतः 1 कल्प का मान 108000000 वर्ष होता है ।

Total Age of Brahma	Kalp	Value of 1 Kalp
8398080000000	/ 77760	108000000

मैंने अपने शोध के अनुसार समस्त गणित को 40 से विभाजित किया है, जिसे मैंने अपने शोध में सिद्ध पाया है ।

	According to ancient texts	/	40	According to me
Total Age of Brahma	311040000000000	/	40	8398080000000
1 Year of Brahma	3110400000000	/	40	77760000000
Value of 1 Kalp	4320000000	/	40	108000000
Value of 1 Mahayug	4320000	/	40	108000
Value of 1 Satyug	1728000	/	40	43200
Value of 1 Tretayug	1296000	/	40	32400
Value of 1 Dwaparyug	864000	/	40	21600
Value of 1 Kaliyug	432000	/	40	10800



मन्वंतर

1 कल्प में का मान 108000000 वर्ष होता है, इस अनुसार 1 महायुग का मान 108000 वर्ष होता है ।

1 Kalp		1 Mahayug
108000000	/	1000 Mahayug = 108000 Year

1 कल्प में 14 मन्वंतर होते हैं, प्रत्येक मन्वंतर में 71 महायुग होते हैं, अतः 1 कल्प में 14 मन्वंतर गुणा 71 महायुग = 994 महायुग होते हैं, 1 कल्प में 1000 महायुग होते हैं, तथा मन्वंतर के अनुसार 1 कल्प में 994 महायुग होते हैं ।

Kalp	Mahayug	Year
1 Kalp	= 1000 Mahayug	= 108000000
1 Manvantar	= 71 Mahayug	= 7668000
1 Kalp = 14 Manvantar	= 994 Mahayug	= 107352000

शेष 6 महायुग का मान (648000) 14 मन्वंतर = 1 कल्प के सन्धि काल का होता है, 14 मन्वंतर में कुल 15 सन्धि काल होते हैं (648000/15 = 43200 वर्ष = सतयुग तुल्य)

1 Kalp	Value of 14 Manvantar	Transition Period
108000000	- 107352000	= 648000

प्रत्येक कल्प में 14 मन्वंतर = 994 महायुग पूर्ण होने पर 6 महायुग तुल्य मान कल्प के सन्धि काल का होता है, इस अवधि में पृथ्वी पर महाप्रलय की स्थिति रहती है, यह अवधि 648000 वर्ष की होती है, प्रत्येक कल्प के आरम्भ एवं अन्त समय (सन्धि काल) में पृथ्वी जल में डूबी हुई रहती है । कल्प/मन्वंतर/महायुग/युग के गणित को समझने के लिए सप्तर्षि गणित को समझना आवश्यक है ।

सप्तर्षि



विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार जिस समय सप्तर्षि मधा नक्षत्र में प्रवेश किये उसी समय से कलियुग प्रारम्भ हुआ ।

विभिन्न ग्रन्थों के अनुवादकर्ताओं ने सप्तर्षि के एक नक्षत्र का मान मनुष्य की पूर्णायु 100 वर्ष के अनुसार गणना की है, अतः सप्तर्षि के 27 नक्षत्र का मान 2700 वर्ष होता है, परन्तु मैंने मनुष्य की पूर्णायु 108 वर्ष के अनुसार गणना की है, इस अनुसार 27 नक्षत्र का मान 2916 वर्ष होता है, इस 108 वर्ष के अनुसार ही वर्तमान कलियुग के उदय के समय सप्तर्षि का मधा नक्षत्र में होना संभव है, 100 वर्ष के अनुसार कर्तई नहीं ।

मैंने सप्तर्षि गणित को 108 वर्ष द्वारा सिद्ध किया है, जिसे आगे समझते हैं ।

ब्रह्मा जी की आयु (ब्रह्माण्ड की आयु) का सूक्ष्म गणित मात्र सप्तर्षि गणित द्वारा ही संभव है ।

सप्तर्षि 108 वर्ष तक 1 नक्षत्र में रहते हैं, 108 वर्ष के अनुसार 27 नक्षत्र का मान 2916 वर्ष होता है, ब्रह्मा जी के 1 वर्ष में कुल 77760000000 मानव वर्ष होता है ।

ब्रह्मा जी के 1 वर्ष के मान 77760000000 को सप्तर्षि के 27 नक्षत्र के मान 2916 वर्ष से विभाजित करते हैं, तो 26666666.67 संख्या प्राप्त हुई ।

अतः प्राप्त संख्या के अनुसार भागफल 77759998056 एवं शेष 1944 की संख्या प्राप्त हुए, इस शेष 1944 को सप्तर्षि के 1 नक्षत्र के मान 108 से विभाजित करने पर 18 की संख्या ज्ञात हुई, नक्षत्र में 18 वां नक्षत्र ज्येष्ठा कहलाता है ।

ब्रह्मा जी की आयु 0 वर्ष के समय सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र में थे तथा 1

वर्ष = 720 कल्प के अंत के समय सप्तर्षि ज्येष्ठा नक्षत्र में थे, पुनः दुसरे वर्ष के आरम्भ के समय सप्तर्षि मूल नक्षत्र में थे, प्रत्येक वर्ष 720 कल्प पश्चात सप्तर्षि 19 वें नक्षत्र में उदय होते हैं, वर्तमान में ब्रह्मा जी की आयु का 52 वा वर्ष चल रहा है, वर्तमान वर्षारंभ (52 वर्ष) के समय सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र में थे, ब्रह्मा जी के 108 वर्ष का अंत रेवती नक्षत्र से होगा ।

Nakshatra	Ashwini	Moola	Magha	Ashwini	Moola	Magha	Ashwini	Moola	Magha
Year	1	2	3	4	5	6	7	8	9
Kalp	720	1440	2160	2880	3600	4320	5040	5760	6480
Year	10	11	12	13	14	15	16	17	18
Kalp	7200	7920	8640	9360	10080	10800	11520	12240	12960
Year	19	20	21	22	23	24	25	26	27
Kalp	13680	14400	15120	15840	16560	17280	18000	18720	19440
Year	28	29	30	31	32	33	34	35	36
Kalp	20160	20880	21600	22320	23040	23760	24480	25200	25920
Year	37	38	39	40	41	42	43	44	45
Kalp	26640	27360	28080	28800	29520	30240	30960	31680	32400
Year	46	47	48	49	50	51	52 ***		
Kalp	33120	33840	34560	35280	36000	36720			

सप्तर्षि के इस गणित के अनुसार वर्तमान कलियुग के उदय के समय सप्तर्षि की स्थिति ज्ञात करते हैं, मेरे शोध के अनुसार ब्रह्मा जी की आयु का 52 वर्ष प्रभाव में है, 52 वें वर्ष के आरम्भ में सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र में उदय हुए थे ।

भिन्न भिन्न कल्पराम्भ में सप्तर्षि की स्थिति ज्ञात करते हैं ।

वर्तमान कल्पराम्भ से वर्तमान कलियुग आरम्भ तक कुल 49021200 वर्ष व्यतीत हो चुके थे ।

Manvantae & Yuga	Year
1 Mahayuga	= 108000
71 Mahayuga (1 Manvantar)	= 7668000

Manvantae & Yuga	Year
6 Manvantar	= 46008000
27 Mahayug	x 2916000
Satyug	43200
Tretayug	32400

Dwaparyug		21600			
Total		49021200			

अब इस प्राप्त वर्ष संख्या 49021200 को सप्तर्षि के 27 नक्षत्र के मान 2916 से विभाजित करते हैं तो 16811.11111 संख्या ज्ञात हुई, भागफल 16811 एवं शेष 324 की संख्या प्राप्त हुए ।

इस शेष 324 को सप्तर्षि के 1 नक्षत्र के मान 108 से विभाजित करने पर 3 की संख्या ज्ञात हुई, नक्षत्र में तीसरा नक्षत्र कृत्तिका कहलाता है, अतः कल्प का आरम्भ अश्विनी से एवं द्वापरयुग का अंत कृत्तिका से हुआ, अतः कलियुग का आरम्भ रोहिणी नक्षत्र से होगा (अश्विनी से चतुर्थ) ।

शास्त्रों के अनुसार वर्तमान कलियुग का उदय मध्य से होने के कारण वर्तमान कल्प का आरम्भ अश्विनी से होना संभव नहीं ।

मध्य से वर्तमान कलियुग का आरम्भ होने के लिए वर्तमान कल्पारम्भ के समय सप्तर्षि का पुनर्वसु नक्षत्र से ही उदय होना ही संभव है (पुनर्वसु से चतुर्थ मध्य) ।

किसी भी कल्प के उदय के समय सप्तर्षि जिस नक्षत्र (उदाहरणः अश्विनी) में रहते हैं उस कल्प का अंत भी उसी नक्षत्र (उदाहरणः अश्विनी) से होता है ।

ब्रह्मा जी के 52 वें वर्ष के समय सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र में थे, इस अनुसार वर्तमान कल्प (सप्तम कल्प) का उदय पुनर्वसु नक्षत्र से हुआ था ।

सप्तम कल्प के वर्तमान कलियुग में सप्तर्षि की स्थिति ।

सप्तम कल्पारम्भ से वर्तमान कलियुग आरम्भ तक कुल 697021200 वर्ष व्यतीत हो चुके थे ।

Kalp & Manvantae		Year			
6 Kalp	=	648000000	/	6	108000000
6 Manvantar	=	46008000	/	6	7668000
27 Mahayug	=	2916000	/	27	108000
Satyug	=	43200			
Tretayug	=	32400			
Dwaparyug	=	21600			
Total		697021200			

अब इस प्राप्त वर्ष संख्या 697021200 को सप्तर्षि के 27 नक्षत्र के मान 2916 से विभाजित करते हैं तो 239033.3333 संख्या ज्ञात हुई, भागफल

239033 एवं शेष 972 की संख्या प्राप्त हुए, इस शेष 972 को सप्तर्षि के 1 नक्षत्र के मान 108 से विभाजित करने पर 9 की संख्या ज्ञात हुई, नक्षत्र में नवां नक्षत्र अश्लेषा कहलाता है ।

अतः 52 वें वर्ष का आरम्भ अश्विनी से एवं द्वापरयुग का अंत अश्लेषा से हुआ, वर्तमान कलियुग का उदय मध्य से होने के कारण वर्तमान सप्तम कल्प का आरम्भ पुनर्वसु नक्षत्र से हुआ था, 697021201 वर्ष से कलियुग का आरम्भ हुआ था ।

52 Year's	Nakshatra	Duration	Years	Div By.
1st Kalp	Ashwini	108000000	108000000	2916
2nd Kalp	Bharni	108000000	216000000	2916
3rd Kalp	Krittika	108000000	324000000	2916
4th Kalp	Rohini	108000000	432000000	2916
5th Kalp	Mrigshira	108000000	540000000	2916
6th Kalp	Aadra	108000000	648000000	2916
7th Kalp ****	Punarvasu			
6 Manvantar		46008000	694008000	2916
27 Mahayug		2916000	696924000	2916
Satyug		43200	696967200	2916
Tretayug		32400	696999600	2916
Dwaparyug		21600	697021200	2916

अतः वर्तमान कलियुग आरम्भ तक ब्रह्मा जी की आयु 51 वर्ष + (3 दिन + 3 रात) = (6 कल्प) + 6 मन्वंतर + 27 महायुग + सत्युग + त्रेतायुग + द्वापरयुग = 3966457021200 वर्ष हुई ।

वर्तमान कल्प के उदय के समय सप्तर्षि पुनर्वसु नक्षत्र में थे, अगले कल्प के उदय के समय सप्तर्षि पुष्य नक्षत्र में रहेंगे ।

मेरे शोध के अनुसार वर्तमान मन्वंतर (वैवश्वत) के आरम्भ बिन्दु में सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र में उदय हुए थे, वर्तमान मन्वंतर में 27 महायुग के पश्चात 28 वें महायुग के उदय के समय भी सप्तर्षि अश्विनी नक्षत्र के आरम्भ बिन्दु में थे, प्रत्येक 27 महायुग = 108000 गुणा 27 = 2916000 वर्ष के पश्चात सप्तर्षि पुनः अश्विनी नक्षत्र में आ जाते हैं, अतः समस्त ग्रह/सप्तर्षि 2916000 वर्ष में अश्विनी नक्षत्र में आ जाते हैं, 2916000 वर्ष का 1 चक्र होता है, वर्तमान सप्तम कल्प के सप्तम मन्वंतर का 27

महायुग = (2916000 वर्ष का 1 चक्र) व्यतीत हो चूका है, वर्तमान में 28 वां महायुग प्रभाव में है, 28 वें महायुग के आरम्भ में सप्तर्षि अश्वनी नक्षत्र में थे ।

ब्रह्मा जी के पूर्णायु 8398080000000 वर्ष में 2916000 वर्ष का कुल 2880000 चक्र होता है, ब्रह्मा जी की आयु के आयु के 54 वर्ष = 180 दिग्री में 2916000 का कुल 1440000 चक्र होता है, प्रत्येक 2916000 वर्ष को समस्त ग्रह एवं सप्तर्षि अश्वनी नक्षत्र में आ जाते हैं, एवं सृष्टि चक्र पुनः आरम्भ होता है ।

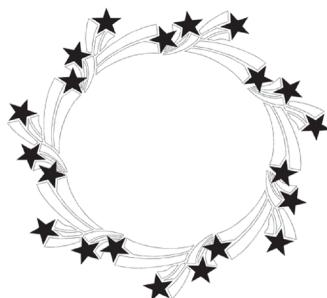
Start of Kalp & Manvantar	Nakshatra
Manvantar (1)	Punarvashu
Manvantar (2)	Shatbhisha
Manvantar (3)	Chitra
Manvantar (4)	Rohini
Manvantar (5)	Uttarashada
Manvantar (6)	Purvaphalguni
Current Manvantar (Mahayug 1)	Ashwini
Mahayug (2)	Bharani
Mahayug (3)	Krittika
Mahayug (4)	Rohini
Mahayug (5)	Mrigshira
Mahayug (6)	Aadra
Mahayug (7)	Punarvashu
Mahayug (8)	Pushya
Mahayug (9)	Ashlesha
Mahayug (10)	Magha
Mahayug (11)	Purvaphalguni
Mahayug (12)	Uttaraphalguni
Mahayug (13)	Hasta
Mahayug (14)	Chitra
Mahayug (15)	Swati
Mahayug (16)	Vishakha
Mahayug (17)	Anuradha
Mahayug (18)	Jyestha

Mahayug (19)	Moola
Mahayug (20)	Purvashadha
Mahayug (21)	Uttarashada
Mahayug (22)	Shrawana
Mahayug (23)	Dhanishtha
Mahayug (24)	Shatbhisha
Mahayug (25)	Purvabhadrapad
Mahayug (26)	Uttarabhadrapad
Mahayug (27)	Revati
Current Mahayug (28)	Ashwini

Saptarshi in Current Mahayug

	According to me	Saptrishi	Start	End
Satyug	43200 Year	400 cycles	Ashwini	Shrawana
Tretayug	32400 Year	300 cycles	Dhanishtha	Purvabhadra
Dwaparyug	21600 Year	200 cycles	Uttarabhadra	Ashlesha
Kaliyug	10800 Year	100 cycles	Magha	Ashwini

शास्त्रों के अनुसार कलियुग उदय के समय सप्तर्षि मध्य नक्षत्र में थे जिसे मैंने अपने गणित (108 वर्ष) द्वारा सिद्ध किया है ।



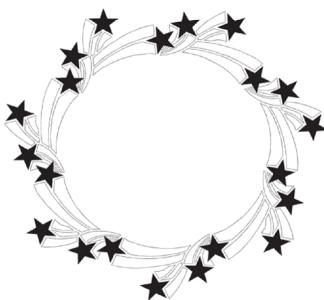
गणना एवं संकल्प

शोध के अनुसार मैंने पाया की धर्म शास्त्र के अनुसार किसी भी यज्ञ में संकल्प मंत्र में निम्न मंत्र का प्रयोग किसी भी यज्ञ को पूर्ण सफलता प्रदान कर सकता है, अगर उचित गणना के अनुसार मंत्र संकल्प किया जाए तो निःसंदेह मंत्र शक्ति जागृत हो सकती है, हमारे यज्ञ हेतु संकल्प में सप्तम कल्पये का प्रयोग नहीं किया जाता है, एवं कलियुग प्रथम चरण को प्रयोग में लिया जाता है, जो अशुद्ध गणना है ।

उचित गणना/संकल्प

ॐ अस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्राह्मणां प्रथम परार्थे, सप्तम कल्पये, सप्तम (वैवस्वतमन्वंतरे), अष्टविंशतितमे कलियुगे, कलियुगे द्वितीय चरणे, कलिसंवते (), सप्तर्षि (अमुक) नक्षत्रे, सूर्य उत्तरायण/दक्षिणायन, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) दिन ।

ब्रह्मा जी के 108 वर्ष का 52 वां वर्ष प्रभाव में है, प्रथम प्रहर 54 वर्ष तक रहेगा ।



वर्षारंभ

सप्तर्षि गणित के पश्चात वर्षारंभ पर चर्चा करते हैं, 2916000 वर्ष का 1 चक्र होता है, 2916000 वर्ष के 1 डिग्री का मान $2916000/360 = 8100$ वर्ष होता है ।

प्रत्येक 1 डिग्री = 8100 वर्ष में वर्षारंभ की तिथि बदलती है, सतयुग का उदय चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि को हुआ था, इसके 8100 वर्ष पश्चात वर्षारंभ श्रावण में तत्पश्चात मार्गशीर्ष में, प्रत्येक 2916000 वर्ष के चक्र का वर्षारंभ चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा से एवं अंत मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा से होता है ।

भगवान् श्री कृष्ण के समय (89100-97200) (द्वापरयुग अन्त तक) वर्षारंभ मार्गशीर्ष शुक्ल प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता था, भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं मासानाम मार्गशीर्षीऽमा । (महीनों में मैं मार्गशीर्ष महीना हूं), कलियुग आरम्भ से 8100 वर्ष = 5111 ई तक वर्षारंभ चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि को होगी ।

Yuga	Start	End	Tithi
Satyug Start	0	8100	Chaitra Shukla Pratipada (01)
Satyug	8100	16200	Shravan Shukla Pratipada
Satyug	16200	24300	Margshirish Shukla Pratipada
Satyug	24300	32400	Chaitra Shukla Pratipada
Satyug	32400	40500	Shravan Shukla Pratipada
Satyug /Tretayug	40500	48600	Margshirish Shukla Pratipada
Tretayug	48600	56700	Chaitra Shukla Pratipada
Tretayug	56700	64800	Shravan Shukla Pratipada
Tretayug	64800	72900	Margshirish Shukla Pratipada
Treta/Dwaparyug	72900	81000	Chaitra Shukla Pratipada
Dwaparyug	81000	89100	Shravan Shukla Pratipada
Dwaparyug	89100	97200	Margshirish Shukla Pratipada
Kaliyug Start	97200	105300	Chaitra Shukla Pratipada

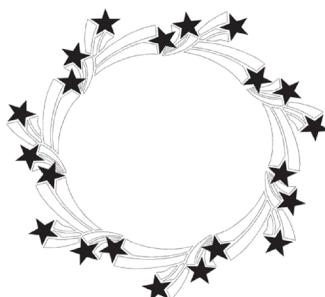
कल्पारम्भ/युगारंभ

मेरे शोध के अनुसार 1 वर्ष का मान 365.2425944 दिन होता है।

वर्तमान कल्पारम्भ से सतयुग आरम्भ तक कुल 48924000 वर्ष गुणा 365.2425944 दिन = 17869128686 दिन होते हैं, इस वर्ष मान (365.2425944) के अनुसार ही वर्तमान कल्पारम्भ रविवार होने से वर्तमान सतयुग आरम्भ बुधवार को हुआ ।

Yuga	Year		Value of 1 Year	Days
6 Manvantar + 27 Mahayug	48924000	/	365.2425944	17869128686
Satyug	43200	/	365.2425944	15778480.08
Tretayug	32400	/	365.2425944	11833860.06
Dwaparyug	21600	/	365.2425944	7889240.039
Kaliyug	10800	/	365.2425944	3944620.019
Ayanmansha (0)	3600	/	365.2425944	1314873.34

Start	Julian No	Date	Month	BC/AD	Day
Current Kalp	-17904000836	21	Mar.	49023196 BC	Sun
Satyug	-34872149.77	4	April	100188 BC	Wed.
Tretayug	-19093669.69	19/20	May	56989 BC	Sun/Mon
Dwaparyug	-7259809.629	22/23	Sept.	24590 BC	Wed/Thu
Kaliyug	629430.4096	15/16	April	2990 BC	Fri/Sat
Ayanmasha 0	1944303.75	20	Mar.	611AD	Sat



1 वर्ष का मान एवं अयनांश

आर्यभटीय ने ई 499 को शून्य (०) अयनांश कहा है लेकिन मेरे शोध के अनुसार शून्य (०) अयनांश 611 ई है ।

20 March 611 (Saturday)				
Chaitra Shukla Pratipada Start	11	15	33	AM
Ashwini Nakshatra Start	11	34	22	AM
Sun Transit in Aries	15	31	59	PM

20 मार्च 611 को उदया तिथि फाल्गुन अमावस्या तिथि थी, अतः 21 मार्च 611 (रविवार) को चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि थी ।

20 मार्च 611 ई को विषुवत अयन शून्य था, मेरे शोध के अनुसार 21 मार्च 2018 का अयनांश 23.27 है, 21 मार्च 2018 को अन्य लोगों के अयनांश का विवरण दे रहा हूँ ।

21-Mar-2018	Deg	Min	Sec
Yukteshwar	22	43	59
Raman	22	39	55
Surya siddhant	22	47	2
Pushya Paksh	22	58	36
J N Bhasin	23	0	59
Rohini Paksh	23	22	37
Abhishek Mishra**	23	27	0
Devdatta	23	44	4
KP	24	0	53
Jagannath	24	6	37
N C Lahiri	24	6	41
Chandrahari	24	50	11
Fagan	24	59	41

अभिषेक मिश्र अयनांश

1 वर्ष का मान 365.2425944 दिन के अनुसार 20 मार्च 611 ई का अयनांश 00:00:00 के अनुसार वर्ष 2000 से 2018 तक के मेरे (अभिषेक मिश्र) अयनांश का विवरण ।

Date	Month	Year	Degree
20	March	611	0:00:00
21	March	2000	23:09:00
21	March	2001	23:10:00
21	March	2002	23:11:00
21	March	2003	23:12:00
21	March	2004	23:13:00
21	March	2005	23:14:00
21	March	2006	23:15:00
21	March	2007	23:16:00
21	March	2008	23:17:00
21	March	2009	23:18:00
21	March	2010	23:19:00
21	March	2011	23:20:00
21	March	2012	23:21:00
21	March	2013	23:22:00
21	March	2014	23:23:00
21	March	2015	23:24:00
21	March	2016	23:25:00
21	March	2017	23:26:00
21	March	2018	23:27:00

कलियुग के 3600 वर्ष पश्चात (20 मार्च 611 ईस्वी) को विषुवत अयन शून्य (0) था, अयनांश चक्र मान 60 वर्ष गुणा 360 डिग्री = प्रत्येक 21600 वर्ष में विषुवत अयन शून्य रहता है, विषुवत अयन शून्य (0) 20 मार्च 611 के अनुसार 21 मार्च 2018 को अयनांश 23.27 होगा, पृथ्वी 23.27 अंश पर झुकी होने के कारण 21 मार्च 2018 को महाप्रलय/जल प्रलय की स्थिति होगी, इं पूर्व 19583 में भी यह स्थिति बनी थी, प्रत्येक 21600 वर्ष में यह स्थिति बनती है, प्रत्येक 21600 वर्ष में मौसम में बड़े परिवर्तन होते हैं, 21600 वर्ष के पांच चक्र 108000 वर्ष = (महायुग) में महाप्रलय की स्थिति बनती है, 21600 वर्ष के पांच चक्र का 1 महायुग होता है, प्रत्येक 108000 वर्ष में महाप्रलय होता है, वर्तमान महायुग में हम कलियुग के द्वितीय चरण में हैं, अतः वर्तमान महायुग एवं कलियुग का अन्त होने में मात्र 5795 वर्ष शेष है, पृथ्वी 23.27 डिग्री पर झुकी हुई है, अतः 21 मार्च 2018 को ही प्रलय/महाप्रलय की स्थिति बन जाएगी, यह स्थिति महायुग/कलियुग के अंत तक रहेगी, 21 मार्च 2015 से 21 मार्च 2018 = 00.03.00 डिग्री में मात्र 3 वर्ष शेष है, मात्र 3 वर्ष में पृथ्वी पर भारी तबाही होगी, वर्ष 2015 से पृथ्वी की भोगोलिक स्थिति में परिवर्तन होने आरम्भ हो जायेगे, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प इत्यादि रोज की बात हो जायेगी, वर्ष 2016 में स्थिति और खराब हो जायेगी, 21 मार्च 2018 तक पृथ्वी की भोगोलिक स्थिति में बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाएगा, जैसे जैसे पृथ्वी 23.27 डिग्री की ओर बढ़ती जायेगी, पृथ्वी में कम्पन बढ़ता जाएगा, एवं 23.27 डिग्री को महाविनाशकारी/प्रलय की स्थिति बन जायेगी, दिन प्रति दिन मौसम में परिवर्तन होते जायेंगे, नदियों का रास्ता बदल जाएगा, 3 वर्ष तक उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव की स्थिति में बड़ा परिवर्तन हो जाएगा, वर्ष 2018 तक पृथ्वी का तापमान बहुत बढ़ जाएगा, प्रचण्ड गर्मी के कारण पृथ्वी पर जल प्रलय होगा, ग्लेसियर/हिमालय के पिघलने से समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा, इस कारण समुद्र का जल और खारा हो जाएगा, समुद्री जल के अत्यधिक खारा हो जाने के कारण स्वच्छ वायु (आक्सीजन) कम प्राप्त होगा, पीने का जल दुर्लभ होता जाएगा स्वच्छ हवा और पानी के आभाव के कारण जीव-जंतुओं की मृत्यु प्रलय का प्रथम लक्षण होगा ।

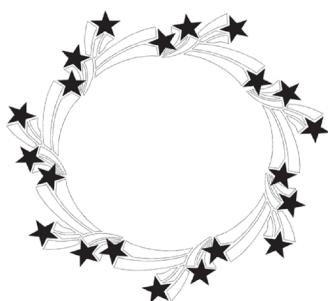
प्रचण्ड गर्मी के कारण समुद्र का जल तक गर्म हो जाएगा, पृथ्वी के बाहरी परत गर्म तो होगा ही, पृथ्वी का आतंरिक परत ओर गर्म हो जाएगा, पृथ्वी के आतंरिक परत गर्म होने के कारण ज्वालामुखी विष्फोट होना आम घटना हो जाएगा, पृथ्वी के आतंरिक परत गर्म होने के कारण पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बहुत बुरी तरह प्रभावित होगा, अतः वर्ष 2018 तक पृथ्वी से समस्त जीव बाढ़/भूकम्प/गर्मी के कारण समाप्त हो जायेंगे, पृथ्वी पर होनेवाले भोगोलिक परिवर्तन का प्रभाव चंद्रमा पर भी पड़ेगा, 23.27 डिग्री के आस-पास पृथ्वी पर होने वाले कम्पन के कारण गुरुत्वाकर्षण प्रभावित होगा, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के प्रभावित होने के कारण पृथ्वी से क्षुद्र ग्रह के भी टकराने की प्रबल संभावना बनेगी जिसके कारण सैकड़ों परमाणु बम जैसी उर्जा उत्पन्न होगी, जिससे वातावरण पूरी तरह तहस-नहस हो जाएगा, उत्पन्न उर्जा के कारण ग्लेसियर पिघल जाएगा जिसके कारण पृथ्वी से जीव समाप्त हो जायेगे, वर्ष 2015-2016 आरम्भ 2017-2018 मध्य 2019-2020 अंत स्थिति रहेगी, 2015 से 2020 तक पृथ्वी पूरी तरह असंतुलित रहेगी, भूकंप एवं गर्मी बढ़ते क्रम में होंगे, मध्यकाल 2017-2018 महा-विनाशकारी होगा ।

पृथ्वी पर किसी भी तरह की महाविनाशकारी (मौसम परिवर्तन सम्बन्धित) घटनाएं प्रत्येक 21600 वर्ष में एवं महाप्रलय 21600 गुण 5 = 108000 वर्ष में घटित होता है, यह स्थिति पृथ्वी के 23.27 डिग्री के करीब आने पर पृथ्वी के कम्पन के कारण संभव होता है, महाविनाशकारी घटनाएं मार्च 2016 से अपना पूर्ण प्रभाव दिखाने आरम्भ कर देंगे, निःसंदेह फरवरी-मार्च 2016 के करीब कई प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक घटनाएं घटित होंगी, दिसंबर 2015 से परिस्थिति अत्यंत विकट होनी शुरू हो जायेगी, दिसंबर 2015 से पूरे विश्व में तेज हवाएं चलेंगी, 2015-2017 तक नदियों के किनारे बसे समस्त शहर, धर्म-स्थल जल मग्न होते चले जायेंगे ।

पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण सौरमंडल के कोई क्षुद्र ग्रह 2016 से 2018 के मध्य पृथ्वी से टकरा सकता है, वर्ष 2015 में वर्तमान महायुग एवं कलियुग के अंत होने में मात्र 5.366% बाकी है, 1 महायुग की आयु 108000 वर्ष के अंत समय में महाप्रलय होता है, अतः महाप्रलय काल 21 मार्च 2015 से ही आरंभ हो चूका है, मात्र 3 वर्ष में पृथ्वी से लगभग

जीवों का अंत हो जाएगा, परन्तु संपूर्ण रूप से नहीं, आने वाले 3 वर्ष के प्रलय काल में पृथ्वी से समस्त तकनीक/हथियार लगभग समाप्त हो जायेंगे, शेष जीव शान्ति से जीवन यापन करेंगे ।

कलियुग के चतुर्थ चरण के अन्त में कल्कि अवतार होगा उनके अवतार लेने के $821/40 = 21$ वर्ष पश्चात पुनः धर्मयुग (सत्युग) का आगमन होगा ।



सूर्य एवं पृथ्वी की दूरी

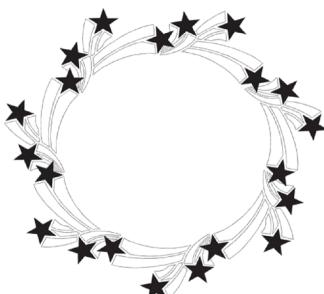
जब ग्रहण में चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह से ढक देता है तब पृथ्वी से सूर्य एवं चंद्रमा एक ही आकर के दिखाई देते हैं, आधुनिक गणित के अनुसार चंद्रमा से सूर्य 400 गुणा बड़ा एवं 400 गुणा दूर है, परन्तु मैंने अपने शोध में पाया की चंद्रमा से सूर्य 432 गुणा बड़ा एवं 432 गुणा दूर है ।

मेरे शोध के अनुसार पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी 1000 गुणा $360 = 360000$ किलोमीटर (न्यूनतम) एवं $108 \text{ गुणा } 432 = 406656 + 360000 = 406656$ किलोमीटर (अधिकतम) है ।

इस अनुसार पृथ्वी से सूर्य की दूरी $360000 \text{ गुणा } 432 = 155520000$ किलोमीटर है ।

सूर्य एवं पृथ्वी की दूरी के अनुसार महायुग की आयु $155520000/1440$ ($24 \text{ गुणा } 60$) = 108000 वर्ष की होती है, पृथ्वी की गति ही समय है, महायुग के मान 108000 वर्ष के अनुसार उतने ही 108000 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, इसी गति एवं पृथ्वी से सूर्य की दूरी के अनुसार पृथ्वी पर 24 घंटे = 1440 मिनट का दिन और रात होता है, जिसके कारण 1 महायुग का मान 108000 वर्ष होता है ।

पृथ्वी के 108000 किलोमीटर प्रतिघंटे की गति के कारण पृथ्वी से $108000/10 = 10800$ किलोमीटर पर पृथ्वी का आभामंडल बनता है, जो कई प्रकार से पृथ्वी की रक्षा करता है ।



Earthquake /भूकम्प

18 अक्टूबर 2015 से 10 मई 2016 तक विश्व में 8 से 9 रिक्टर पैमाने का भूकंप एवं सुनामी आएगा, एवं जब वृहस्पति कन्या राशि में रहेंगे तो दिल को दहला देने वाला भूकम्प आएगा ।

मैंने भूकम्प पर विशेष रूप से शोध किया है, शोध में पाया की पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण को वृहस्पति विशेष रूप से प्रभावित करते हैं, जिसके कारण पृथ्वी के आंतरिक संरचना में परिवर्तन होता है, जो भूकम्प का कारण बनता है ।

मेरे शोध के अनुसार पृथ्वी पर कुल 12 सन्धि स्थल हैं, प्रत्येक सन्धि स्थल 0 से 6.666667 डिग्री (अक्षांश-देशांतर) तक होता है, इन संधि स्थलों में गुरुत्वाकर्षण का आत्याधिक दबाव बनता है, अतः यह क्षेत्र विशेष रूप से भूकम्प प्रभावित क्षेत्र होते हैं ।

0	to	6.666667	Degree	सन्धि स्थल
30	to	36.666667	Degree	सन्धि स्थल
60	to	66.666667	Degree	सन्धि स्थल
90	to	96.666667	Degree	सन्धि स्थल
120	to	126.666667	Degree	सन्धि स्थल
150	to	156.666667	Degree	सन्धि स्थल
180	to	186.666667	Degree	सन्धि स्थल
210	to	216.666667	Degree	सन्धि स्थल
240	to	246.666667	Degree	सन्धि स्थल
270	to	276.666667	Degree	सन्धि स्थल
300	to	306.666667	Degree	सन्धि स्थल
330	to	336.666667	Degree	सन्धि स्थल
360	to	6.666667	Degree	सन्धि स्थल

1 योजन का मान

आधुनिक गणित के अनुसार 1 योजन का मान 16 किलोमीटर है, परन्तु मेरे शोध के अनुसार 1 योजन का मान 360 मीटर होता है, 36 किलोमीटर में 100 योजन होता है ।

$$100/36 = 2.77777778$$

मेरे शोध के अनुसार इसे भारतीय ग्रन्थ (हनुमान चालीसा) के अनुसार समझते हैं, हनुमान चालीसा की रचना गोस्वामी श्री तुलसीदास जी आज से करीब 400 वर्ष पहले किया, तुलसीदास जी का जन्म कलियुग में हुआ था, इस आधार पर उन्होंने कलियुग के मान 432000 वर्ष के अनुसार वर्णन किया है ।

युग (कलियुग = 432000) सहस्र (1000) = 432000000 योजन पर भानु (सूर्य), $432000000/2.77777778 = 1555200000$ किलोमीटर पृथ्वी से सूर्य की दूरी, जिसे मैंने महायुग की आयु 108000 गुणा 1440 के अनुसार सिद्ध किया है ।

दूसरा वर्णन

भगवान हनुमान जी के समुद्र लांघने की कथा के अनुसार रामेश्वरम से लंका की दूरी योजन में

माता सीता की खोज करते समय जब भगवान हनुमान जी, अंगद, जामवंत आदि समुद्र तट पर पहुंचे तो 100 योजन = (36 किलोमीटर) विशाल समुद्र को देखकर उनका उत्साह कम हो तब जामवंत ने भगवान हनुमान को उनके बल व पराक्रम का स्मरण करवाया और भगवान हनुमान ने 100 योजन (36 किलोमीटर) विशाल समुद्र को एक छलांग में ही पार कर लिया ।

अतः आधुनिक गणित के अनुसार 1 योजन का मान 16 किलोमीटर गलत है, क्योंकि आधुनिक मान के अनुसार 100 योजन = 1600 किलोमीटर होता है, रामेश्वरम समुद्र के पास से लंका की दूरी 1600 किलोमीटर नहीं है, रामसेतु के अनुसार दोनों देश के तट में मात्र अधिकतम 36 किलोमीटर का अंतर है ।

मात्र 400 वर्ष पहले 1 योजन का सटीक मान लोग (गोस्वामी श्री

तुलसीदास जी) जानते थे, परन्तु वर्तमान आधुनिक काल में भटक कर इनका गणित 4444% बढ़ गया, अधूरे ज्ञान के कारण धर्म-शास्त्र में वर्णित सूत्र का लोग मजाक उड़ाने लगे, की हनुमान जी 1600 किलोमीटर का समुद्र कैसे पार किये जबकि रामसुते की लम्बाई मात्र 30 किलोमीटर है ।

तीसरा वर्णन

विभिन्न ग्रंथों में भारतवर्ष का उत्तर से दक्षिण तक का विस्तार 9000 योजन कहा गया है, वर्णन के अनुसार यह स्वर्ग अपवर्ग प्राप्त कराने वाली कर्मभूमि है ।

अतः समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में भारतवर्ष स्थित है। इसका विस्तार नौ हजार योजन = $9000/2.77777778 = 3240$ किलोमीटर है । कश्मीर से रामेश्वरम तक की दूरी भी यही है ।

मात्र 360 मीटर = 1 योजन होता है, परन्तु आधुनिक मान में अब 16000 मीटर = 1 योजन के रूप में लिया जाता है ।

कल्प, मन्वंतर एवं सप्तर्षि गणित के शोध के पश्चात ही मैं योजन का सटीक मान प्राप्त कर सका ।

Yojana	KM
1	0.36
10	3.6
100	36
1000	360
10000	3600
100000	36000
1000000	360000
10000000	3600000
100000000	36000000
432000000	155520000 Dis of Sun From earth

पृथ्वी से सूर्य की दूरी एवं प्रकाश की गति

पृथ्वी से सूर्य की दूरी 155520000 किलोमीटर है इस अनुसार 324000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड (प्रकाश की गति) के अनुसार 480 सेकण्ड में पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश आता है ।



आधुनिक विज्ञान के अनुसार प्रकाश की गति 300000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड है, प्रकाश की गति 300000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड के अनुसार 483 सेकण्ड में पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश आता है ।

इस गणित के अनुसार पृथ्वी से सूर्य की दूरी 300000 गुणा 483 = 144900000 किलोमीटर एवं चंद्रमा की दुरी $144900000/400 = 362250$ किलोमीटर है ।

परन्तु मेरे शोध के अनुसार प्रकाश की गति 324000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड है, इस गति से पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश आने में सूर्य से पृथ्वी की दूरी 155520000 किलोमीटर / प्रकाश की गति 324000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड = 480 सेकण्ड = 8 मिनट लगता है, अगर आधुनिक मान के अनुसार प्रकाश की गति लेते हैं तो सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर आने में $155520000/300000 = 518.4$ सेकण्ड लगेगा जो $518.4 - 480 = 38.4$ सेकण्ड अधिक है ।

अतः प्रकाश की गति का निश्चित मान 324000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड है ।

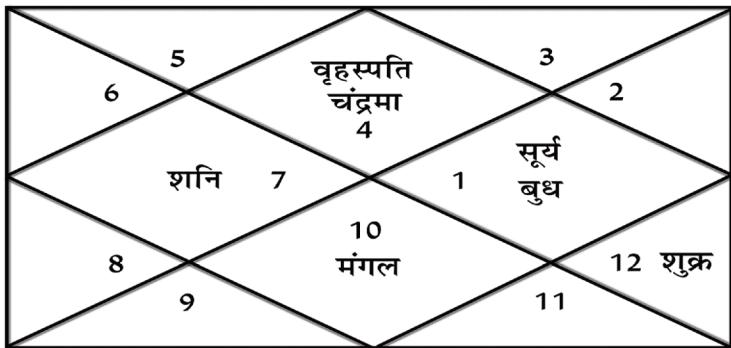
	According to Science	According to me
Dis of Sun From Earth	144900000 KM	155520000 KM
Dis of Moon From Earth	Ave Distance 384400 Km	Ave Dis 383328 Km
Light Year	300000 KM Per Second	324000 KM Per Sec
Sun Light Reach Earth	483 Second	480 Sec
Value of 100 Yojan	1600 KM	36 KM

भगवान श्री राम

भगवान श्री राम का जन्म त्रेता युग के तृतीय चरण में हुआ था, इनका जन्म चैत्र शुक्लपक्ष नवमी तिथि मंगलवार को हुआ था, जन्म के समय सूर्य, मंगल, वृहस्पति, शुक्र एवं शनि उच्च राशि के स्थित थे, चंद्रमा कर्क (स्व-राशि) में वृहस्पति के साथ स्थित थे, बृद्ध सूर्य के साथ मेष राशि में स्थित थे ।

भगवान श्री राम का जन्म 14 जून 33253 ई पूर्व मंगलवार को अयोध्या में हुआ था ।

भगवान श्री राम की जन्म कुण्डली



मैंने समस्त गणित को 40 से विभाजित किया है, शास्त्र के अनुसार महायुग का बहुत मान लेते हैं तो उस अनुसार श्री राम का जन्म $33253 - 2990 = 30245$ गुणा $40 = 1209800 + 2990 = 1212790$ (बारह लाख बारह हजार सात सौ नबे) इस्की पूर्व हुआ था, चूँकि मैंने समस्त गणित को 40 से विभाजित कर सटीक मान प्राप्त किया है, इस अनुसार श्री राम का जन्म मात्र 33253 ई पूर्व हुआ था ।

रामसेतु

ना भगवान श्री राम बारह लाख वर्ष पूर्व हुए थे ना ही रामसेतु बारह लाख वर्ष पूर्व बना था, मेरे शोध के अनुसार भगवान श्री राम का जन्म 14 जून 33253 ई पूर्व मंगलवार को अयोध्या में हुआ था, इसके अनुसार 33214 ई पूर्व रामसेतु का निर्माण हुआ था, यह अकाद्य सत्य है, जिसे मैंने अपने समस्त शोध द्वारा सिद्ध किया है ।

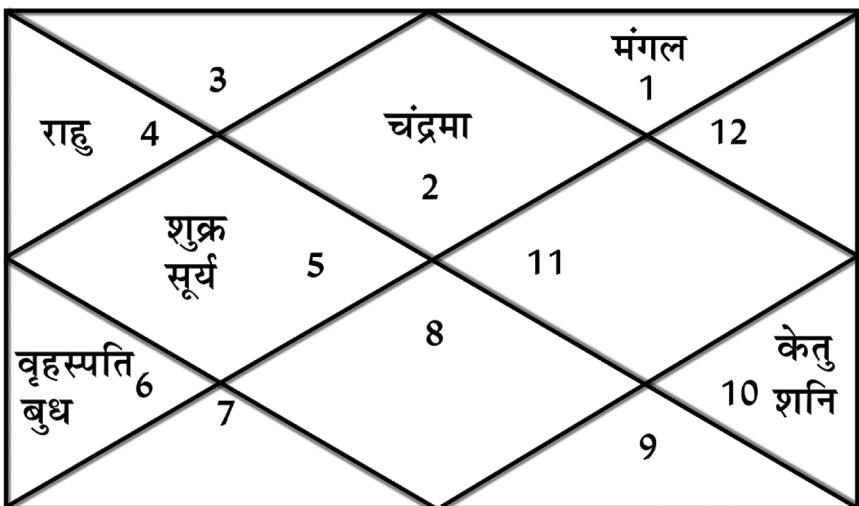
मेरे शोध के अनुसार सत्युग की आयु 43200 वर्ष, त्रेतायुग 32400 वर्ष, द्वापरयुग 21600 वर्ष एवं कलियुग की आयु 10800 वर्ष की है ।

भगवान् श्री कृष्ण

भगवान् श्री कृष्ण का जन्म द्वापरयुग के चतुर्थ चरण में 8 सितम्बर -3249 (बुधवार) के मध्य रात्रि को भाद्रपद (चैत्रादी) कृष्णपक्ष अष्टमी एवं श्रावण (कर्तिकादि) कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि को हुआ था। जन्म समय रात्रि 11:59:59 बजे

जन्मकालीन तिथि श्रावण कृष्णपक्ष अष्टमी, नक्षत्र रोहिणी, दिन बुधवार चन्द्रोदय रात्रि 11:35, चंद्रास्त अगले दिन दोपहर 12:29

भगवान् श्री कृष्ण की जन्म कुण्डली



कीलक संवत्सर (3249-3248) 8 सितम्बर -3249 (बुधवार) श्रावण कृष्णपक्ष अष्टमी तिथि को भगवान् श्री कृष्ण का जन्म हुआ था।

आनंद संवत्सर (3123-3122) 10 अप्रैल -3123 (मंगलवार) (चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि) को दोपहर में श्री कृष्ण की मृत्यु हुई, इनकी मृत्यु के साथ ही द्वापरयुग का अंत मान लिया गया।

महाभारत युद्ध

बहुधान्य संवत्सर (3159-3158) में 20 दिसंबर -3159 मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष एकादशी तिथि (सोमवार) को महाभारत युद्ध आरम्भ हुआ था, इस समय भगवान् श्री कृष्ण की आयु 32975 दिन थी ।

महाभारत युद्ध के 12895 दिन (36 वें वर्ष) 10 अप्रैल -3123 चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि को भगवान् श्री कृष्ण का स्वर्गवास हुआ था, भगवान् श्री कृष्ण की मृत्यु के पश्चात यादव कुल के लोग आपसी युद्ध में मारे गए, महारानी गांधारी के श्राप के कारण (युद्ध से 36 वें वर्ष) श्री कृष्ण की मृत्यु हुई, श्री कृष्ण की मृत्यु के पश्चात समस्त यादव कुल के लोग आपसी युद्ध में मारे गए तत्पश्चात भाद्रपद कृष्णपक्ष त्रयोदशी के दिन द्वारका नगरी जल में झूब गयी, इस दिन द्वापरयुग का पूर्णतः अंत तथा कलियुग का उदय माना गया, परन्तु ज्योतिषीय गणित के अनुसार कलियुग का उदय 15/16 अप्रैल 2990 (चैत्र शुक्लपक्ष सप्तमी तिथि को) प्रभव संवत्सर में हुआ था ।

भगवान् श्री कृष्ण की मृत्यु 10 अप्रैल -3123 एवं कलियुग का उदय 15/16 अप्रैल -2990 दोनों घटनाक्रम में 133.0157 वर्ष का अंतर है ।

महाभारत युद्ध, श्रीकृष्ण के स्वर्गारोहण एवं द्वारका नगरी के जल में समा जाने के पश्चात कलियुग अपना प्रभाव दिखाना आरम्भ कर दिया, भारत से वैदिक युग की सभ्यता का अन्त हो गया, ऋषि-मुनि हिमालय की ओर चले गए, ज्ञान की देवी (सरस्वती नदी) कलियुग के बढ़ते प्रभाव के कारण लुप्त हो गयी ।

बहुधान्य संवत्सर (3159-3158) में 20 दिसंबर 3159 मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष एकादशी तिथि (सोमवार) को महाभारत युद्ध हुआ था, युधारम्भ के (33 वें दिन) 22 जनवरी 3158 पौष शुक्लपक्ष पूर्णिमा तिथि को श्री युधिष्ठिर का राज्याभिषेक किया गया, प्रमाथी संवत्सर (3158-3157) में श्री युधिष्ठिर संवत आरम्भ हुआ ।

(भूमि दान) दानपात्र का विवरण

प्रमाथी संवत्सर (3158-3157) श्री युधिष्ठिर संवत आरम्भ के 89 वें वर्ष में प्लवंग संवत्सर (3070-3069) 11 अप्रैल 3069 चैत्र कृष्णपक्ष अमावस्या तिथि (सोमवार) को श्री जनमेजय मंदिर निर्माण हेतु भूमि दान में दिया ।

दानपात्र का विवरण

श्रीकुरुवंशावतंस श्रीजनमेजयभूपालानां दानशासनपत्रं । पान्तु वो जलदश्यामाः शाङ्गर्ज्याधातकर्कशाः ॥ त्रैलोक्यमण्डपस्तम्भाशचत्वारो हरिबाहवः ॥ स्वस्तिश्री जयाभ्युदये युधिष्ठिरश्के प्लवङ्गाख्ये एकोननवति (89) वत्सरे सहस्यमासि अमावास्यायां सोमवासरे श्रीमन्महाराजाधिराज परमेश्वरो वीराग्रणी याघ्रपादगोत्रजः श्रीजनमेजयभूपः किञ्चिन्धानगर्या सिंहासनस्थः सकलवर्णीश्रमधर्मप्रतिपालकः पश्चिमदेशस्य सीतापुरः वृकोदरक्षेत्रे तत्रत्य मुनिवृन्दमठस्य गरुडवाहन श्रीमच्छिष्ठ कैकयनाथैरराधित सीतारामस्य पूजार्थं कृत भूदान-शासनमस्मत्रपितामह युधिष्ठिराधिष्ठित मुनिवृन्दक्षेत्रस्य चतुःसीमा परिमितिक्रमः-पूर्वभागे एव उत्तर वाहिन्यास्तुभद्रया पश्चिमे दक्षिण भागे अगस्त्याश्रमसंगमादुत्तरे । पश्चिमे पाषाणनद्याः पूर्वे । उत्तरभागे च्छिन्न नदया दक्षिणे । ये (ए) तन्मध्यस्थित मुनिवृन्दारक क्षेत्रं भावच्छिष्ठपरंपरा चन्द्राकं पर्यन्तं निधि निक्षेप जल पाषाणाछिन्या गामिसिद्ध साध्य तेजः स्वाम्य सहितं स्वबुद्ध्याऽनुकूल्येनाऽस्मत पितृणां विष्णुलोक प्राप्यर्थं हरिहर सन्निधावुपराग समये सहिरण्येन तुंगभद्रा जलधारा पूर्वकं क्षेत्रं यतिहस्ते दत्तो (दत्तवान) स्म्यहं । एतद्वर्म साधनस्य साक्षिणः ॥ आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च दद्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च । अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं

कलियुग उदय की तीन तिथियाँ मानी गयी हैं ।

- आनंद संवत्सर (3123-3122) भगवान् श्री कृष्ण की मृत्यु (चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा) ।
- आनंद संवत्सर (3123-3122) द्वारका नगरी के समुद्र में समा जाने का वर्ष (भाद्रपद कृष्णपक्ष त्रयोदशी) ।
- प्रभव् संवत्सर (2990-2989) चैत्र शुक्लपक्ष सप्तमी ।

गणितीय दृष्टि से कलियुग उदय की तिथि (प्रभव् संवत्सर) (2990-2989) 15/16 अप्रैल 2990 (शनिवार) है ।

श्री कृष्ण के जन्म वर्ष से 300 वर्ष तक के संवत्सर का वर्णन

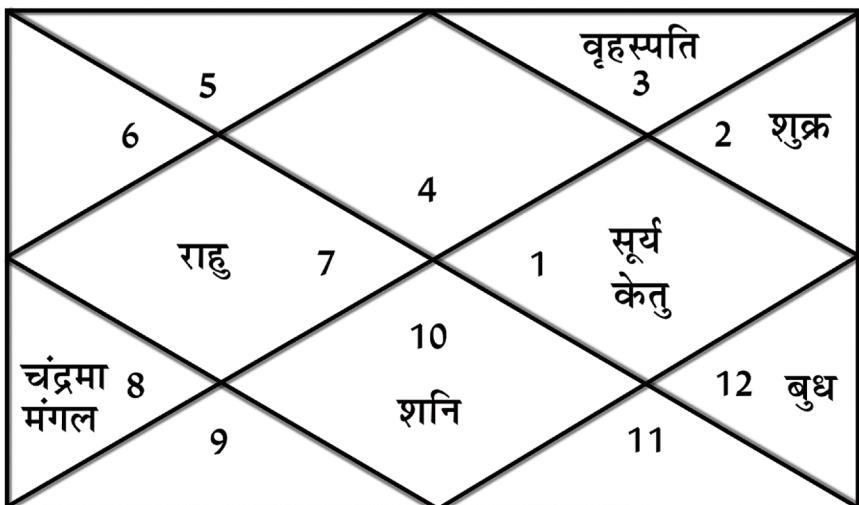
Samvatsar	Year	Year	Year	Year	Year
42. Kīlaka	3249-3248	3189-3188	3129-3128	3069-3068	3009-3008
43. Saumya	3248-3247	3188-3187	3128-3127	3068-3067	3008-3007
44. Sādhārana	3247-3246	3187-3186	3127-3126	3067-3066	3007-3006
45. Virodhikruthi	3246-3245	3186-3185	3126-3125	3066-3065	3006-3005
46. Paridhāvi	3245-3244	3185-3184	3125-3124	3065-3064	3005-3004
47. Pramādicha	3244-3243	3184-3183	3124-3123	3064-3063	3004-3003
48. Ānanda	3243-3242	3183-3182	3123-3122	3063-3062	3003-3002
49. Rākshasa	3242-3241	3182-3181	3122-3121	3062-3061	3002-3001
50. Anala	3241-3240	3181-3180	3121-3120	3061-3060	3001-3000
51. Pingala	3240-3239	3180-3179	3120-3119	3060-3059	3000-2999
52. Kālayukthi	3239-3238	3179-3178	3119-3118	3059-3058	2999-2998
53. Siddhārthi	3238-3237	3178-3177	3118-3117	3058-3057	2998-2997
54. Raudra	3237-3236	3177-3176	3117-3116	3057-3056	2997-2996
55. Durmathi	3236-3235	3176-3175	3116-3115	3056-3055	2996-2995
56. Dundubhi	3235-3234	3175-3174	3115-3114	3055-3054	2995-2994
57. Rudhirodgāri	3234-3233	3174-3173	3114-3113	3054-3053	2994-2993
58. Raktākshi	3233-3232	3173-3172	3113-3112	3053-3052	2993-2992
59. Krodhana	3232-3231	3172-3171	3112-3111	3052-3051	2992-2991
60. Kshaya	3231-3230	3171-3170	3111-3110	3051-3050	2991-2990
01. Prabhava	3230-3229	3170-3169	3110-3109	3050-3049	2990-2989
02. Vibhava	3229-3228	3169-3168	3109-3108	3049-3048	2989-2988
03. Shukla	3228-3227	3168-3167	3108-3107	3048-3047	2988-2987
04. Pramoda	3227-3226	3167-3166	3107-3106	3047-3046	2987-2986

05. Prajāpati	3226-3225	3166-3165	3106-3105	3046-3045	2986-2985
06. Āngirasa	3225-3224	3165-3164	3105-3104	3045-3044	2985-2984
07. Shrīmukha	3224-3223	3164-3163	3104-3103	3044-3043	2984-2983
08. Bhāva	3223-3222	3163-3162	3103-3102	3043-3042	2983-2982
09. Yuva	3222-3221	3162-3161	3102-3101	3042-3041	2982-2981
10. Dhātri	3221-3220	3161-3160	3101-3100	3041-3040	2981-2980
11. Īshvara	3220-3219	3160-3159	3100-3099	3040-3039	2980-2979
12. Bahudhānya	3219-3218	3159-3158	3099-3098	3039-3038	2979-2978
13. Pramādhi	3218-3217	3158-3157	3098-3097	3038-3037	2978-2977
14. Vikrama	3217-3216	3157-3156	3097-3096	3037-3036	2977-2976
15. Vrisha	3216-3215	3156-3155	3096-3095	3036-3035	2976-2975
16. Chitrabhānu	3215-3214	3155-3154	3095-3094	3035-3034	2975-2974
17. Svabhānu	3214-3213	3154-3153	3094-3093	3034-3033	2974-2973
18. Tārana	3213-3212	3153-3152	3093-3092	3033-3032	2973-2972
19. Pārthiva	3212-3211	3152-3151	3092-3091	3032-3031	2972-2971
20. Vyaya	3211-3210	3151-3150	3091-3090	3031-3030	2971-2970
21. Sarvajeeth	3210-3209	3150-3149	3090-3089	3030-3029	2970-2969
22. Sarvadhāri	3209-3208	3149-3148	3089-3088	3029-3028	2969-2968
23. Virodhī	3208-3207	3148-3147	3088-3087	3028-3027	2968-2967
24. Vikrita	3207-3206	3147-3146	3087-3086	3027-3026	2967-2966
25. Khara	3206-3205	3146-3145	3086-3085	3026-3025	2966-2965
26. Nandana	3205-3204	3145-3144	3085-3084	3025-3024	2965-2964
27. Vijaya	3204-3203	3144-3143	3084-3083	3024-3023	2964-2963
28. Jaya	3203-3202	3143-3142	3083-3082	3023-3022	2963-2962
29. Manmadha	3202-3201	3142-3141	3082-3081	3022-3021	2962-2961
30. Durmukhi	3201-3200	3141-3140	3081-3080	3021-3020	2961-2960
31. Hevilambi	3200-3199	3140-3139	3080-3079	3020-3019	2960-2959
32. Vilambi	3199-3198	3139-3138	3079-3078	3019-3018	2959-2958
33. Vikāri	3198-3197	3138-3137	3078-3077	3018-3017	2958-2957
34. Shārvāri	3197-3196	3137-3136	3077-3076	3017-3016	2957-2956
35. Plava	3196-3195	3136-3135	3076-3075	3016-3015	2956-2955
36. Shubhakruti	3195-3194	3135-3134	3075-3074	3015-3014	2955-2954
37. Sobhakruthi	3194-3193	3134-3133	3074-3073	3014-3013	2954-2953
38. Krodhi	3193-3192	3133-3132	3073-3072	3013-3012	2953-2952
39. Vishvāvasu	3192-3191	3132-3131	3072-3071	3012-3011	2952-2951
40. Parābhava	3191-3190	3131-3130	3071-3070	3011-3010	2951-2950
41. Plavanga	3190-3189	3130-3129	3070-3069	3010-3009	2950-2949

भगवान गौतम बुद्ध

महाभारत युद्ध के समय अर्जुन पौत्र परीक्षित का जन्म हुआ था, श्री युधिष्ठिर युद्ध के 36 वें वर्ष श्री अर्जुन के पौत्र परीक्षित का राज्याभिषेक किये, श्री परीक्षित 24 वर्ष तक हस्तिनापुर में शासन किये एवं 60 वर्ष की की आयु में उनकी मृत्यु हुई श्री परीक्षित की मृत्यु तक्षक नाग के काटने से हुई श्री परीक्षित की मृत्यु के पश्चात परीक्षित पुत्र का राज्याभिषेक किया गया था, श्री जनमेजय के राज्याभिषेक के 2526 वर्ष पश्चात 1 अप्रैल -573 (बुधवार) श्री गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था, गौतम बुद्ध के पिता सम्प्राट शुद्धोधन शाक्य वंश के राजा थे, गौतम बुद्ध को शाक्य मुनि के नाम से भी जाना जाता था, उस काल में गौतम बुद्ध के प्रभाव वश उनके जन्म वर्ष से शक सम्वत आरम्भ हुआ, गौतम बुद्ध का जन्म 1 अप्रैल -573 (बुधवार) वैशाख शुक्लपक्ष पूर्णिमा तिथि को हुआ था।

भगवान गौतम बुद्ध की जन्म कुण्डली



श्री वराहमिहिर

गौतम बुद्ध के जन्म वर्ष (-573) शक काल के 421 वें वर्ष 573-421 = 152 ई पूर्व में महान ज्योतिषी वराहमिहिर का जन्म हुआ था, श्री वराहमिहिर सप्ताट विक्रमादित्य के समकालीन थे, श्री वराहमिहिर सप्ताट विक्रमादित्य के दरबार दरबार के नवरत्नों में एक थे, श्री वराहमिहिर सप्ताट विक्रमादित्य से उम्र में 29 वर्ष बड़े थे ।

सप्ताट विक्रमादित्य

भविष्य पुराण के अनुसार सप्ताट विक्रमादित्य का जन्म कलियुग के 3000 वर्ष पश्चात हुआ था, श्री कृष्ण की मृत्यु एवं द्वारका नगरी का अन्त होने के कारण द्वापरयुग के 3000 वर्ष पश्चात 3001 वर्ष (आनंद संवत्सर) (123-122) में सप्ताट विक्रमादित्य का जन्म हुआ था, इनकी जन्म कुण डली तुला लग्नधतुला राशि की है, इनका जन्म 31 मई - 123 (मंगलवार) आषाढ़ शुलपक्ष एकादशी तिथि (हरि-शयनी एकादशी) को हुआ था । कवि कालिदास (जो सप्ताट विक्रमादित्य के नव रत्नों में एक थे) के अनुसार कलियुग के 3045 वें वर्ष में विक्रम सम्वत आरम्भ हुआ था, इस समय सप्ताट विक्रमादित्य की उम्र 45 वर्ष थी ।

विक्रम संवत

मेरे शोध के अनुसार श्री कृष्ण की मृत्यु (कलियुग आरम्भ) -3123 में हुई थी, अतः $3123-3045 = 78$ ई पूर्व, चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथि (सोमवार) 7 मार्च -78 को विक्रम संवत आरम्भ हुआ, इस अनुसार विक्रम संवत आरम्भ -78 के 135 वें वर्ष 57 ई में शालिवाहन शक संवत आरम्भ हुआ ।

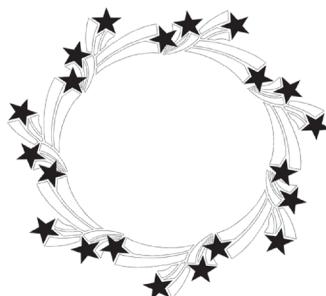
परन्तु आर्यभट्टीय ग्रन्थ के अनुसार श्री कृष्ण की मृत्यु 18 फरवरी -3102 को हुआ, जिसके प्रभाव वश उसी दिन कलियुग का उदय माना गया इस गणित के अनुसार कलियुग 3045 वें वर्ष में $3102-3045 = 57$ ई पूर्व को विक्रम संवत आरम्भ हुआ, विक्रम संवत के 135 वें वर्ष 78 ई में शालिवाहन संवत आरम्भ हुआ ।

परन्तु मैंने अपने शोध में 78 ई पूर्व विक्रम संवत एवं 57 ई में शालिवाहन संवत का आरम्भ होना सिद्ध पाया ।

प्रश्नः मैंने विक्रम संवत् 78 ई पूर्व एवं शालिवाहन संवत् 57 ई को क्यों लिया है ।

ऊपर के गणित में मैंने सिद्ध किया है की भगवान् श्री कृष्ण का जन्म ई पूर्व 8 सितम्बर -3249 को हुआ था एवं उनकी मृत्यु 10 अप्रैल -3123 को हुई थी, भगवान् श्री कृष्ण पृथ्वी पर 45870 दिन = 125 वर्ष 214 दिन तक थे, सभी ग्रंथों में श्री कृष्ण की आयु 125 वर्ष 7 माह कही गयी है ।

अगर आर्यभट्टीय ग्रन्थ के अनुसार श्री कृष्ण की मृत्यु 18 फरवरी -3102 को लेते हैं तो भगवान् श्री कृष्ण की आयु 53489 दिन = 146.44787 वर्ष होनी चाहिए जो गलत है क्योंकि सभी ग्रंथों में भगवान् श्री कृष्ण की आयु 125 वर्ष 7 माह कही गयी है ।



आर्यभट्ट

षष्ठ्यब्दानां षष्ठ्यदा व्यतीतास्त्रयश्च युगपादाः ।
त्र्यधिका विंशतिरब्दास्तदेह मम जन्मनो व्यतीताः ॥

आर्यभट्टीय ग्रन्थ में श्री आर्यभट कहते हैं की कलियुग के 3600 वर्ष पूर्ण होने पर मेरी आयु 23 वर्ष की थी, मेरे शोध के अनुसार कलियुग का 3600 वर्ष 611 ई को पूर्ण हुआ इस अनुसार श्री आर्यभट का जन्म 588 ई में हुआ था ।

आर्यभट्टीय ग्रन्थ के अनुसार श्री कृष्ण की मृत्यु 18 फरवरी -3102 को हुआ, श्री कृष्ण की मृत्यु के साथ ही कलियुग का उदय माना गया, उनके अनुसार 18 फरवरी -3102 से 3600 वर्ष 21 मार्च 499 को पूर्ण हुआ, अतः 21 मार्च 499 के अनुसार उनका जन्म 23 वर्ष पूर्व 476 ई निर्धारित किया है ।

श्री कृष्ण की मृत्यु के साथ ही कलियुग उदय माना है उन्होंने, परन्तु मेरे शोध के अनुसार श्री आर्यभट का जन्म 21 मार्च 611 ई (रविवार) मेष संक्रांति के अनुसार 23 वर्ष पूर्व 588 ई में हुआ था ।

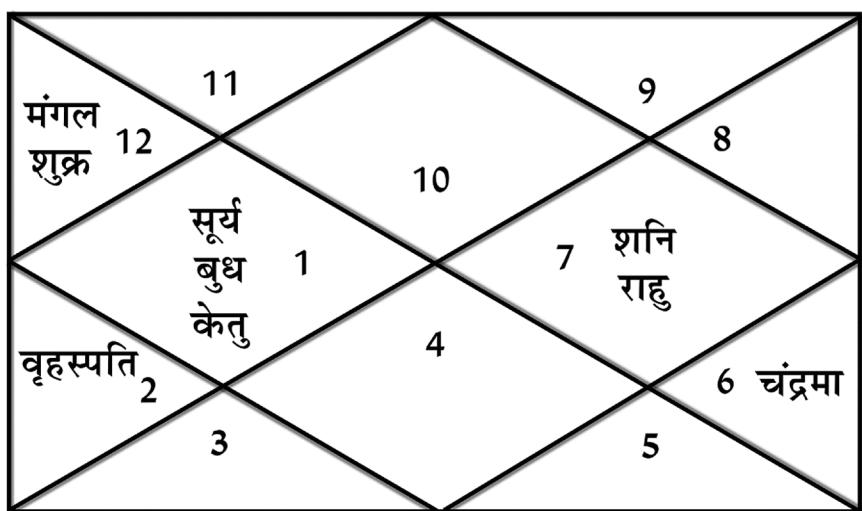
आर्यभट्टीय ग्रन्थ के अनुवादकर्ताओं एवं मेरे शोध के अनुसार श्री आर्यभट के जन्म में 112 वर्ष का अंतर है $588 - 476 = 112$ वर्ष

मैंने समस्त शोध जुलियन कैलेन्डर के अनुसार किया है

भगवान महावीर

भगवान महावीर का जन्म 21 मार्च ई पूर्व 610 चैत्र शुक्लपक्ष त्रयोदशी तिथि (सोमवार) को मध्य रात्रि में हस्त नक्षत्र में हुआ था, इनकी कुण्डली में सूर्य, शनि, एवं शुक्र उच्च राशि के थे, चंद्रमा एवं वृहस्पति त्रिकोण में स्थित थे, चंद्रमा एवं वृहस्पति में $5/9$ सम्बन्ध था, इनकी कुण्डली में साधु, गन्धर्व, मृदंग, महायोगदा, महापुरुष योग एवं बुधादित्य नामक अत्यंत उच्च कोटि के योग स्थित हैं।

भगवान महावीर की जन्म कुण्डली



Book Translated in English by
Achintya Shaw (Heema) & Tannu Priya

Contents

01	Deva Year and Divine Year	49-51
02	Length of Kalp	52-53
03	Manvantar	54
04	Saptarishi (Big-Dipper)	55-61
05	Kalp (Eon) and Satyug Starts.	62
06	Length of a Year Precession cycle	63
07	Comparison of 13 Ayanamsa	63
08	Abhishek mishra's Ayanamsa	63-64
09	Cyclical Destruction (Mahapralay)	65-67
10	Sun and Moon Revolution	68
11	Sun, Earth and Moon Distance.	68
12	Light travels at a speed	68
13	Lord Ram	69
14	Lord Krishna	70
15	Mahabharata War	71
16	Beginning of the Kali Yuga	71
17	Lord Gautam Buddha	71-72
18	Lord Mahavir	72

Deva Year and Divine Year

Reckoning of time for Brahma (Universe) By Deva and Divine Year.
Deva year used for Planets and Divine for Nakshatra.

According to Manu-smriti and other ancient texts, four parts of Mahayuga Satyug of 4800 Deva Year, Tretayug of 3600 Year, Dwaparyug of 2400 year and Kaliyug of 1200 year, therefore 1 Mahayuga is of 12,000 Deva Years.

12,000 Dev Years equal to 4000 Divya Year. One cycle of the above four Yugas is one Mahayuga (Satyug, Tretayug, Dwaparyug, and Kaliyug)

It has been observed; the interpreters of Manusmriti has calculated and considered 360 Human Year as 1 Deva year and 1080 Human Year as 1 Divya year. Therefore, according to interpreters of various ancient texts value of 1 Mahayug is 4.32 million years.

But based on my findings 9 Human Year is 1 Deva year and 27 Human Years is 1 Divya year.

Therefore 4000 Divya years (27×4000) equal to 108000 Manav (Human) Years (Mahayuga), 9 planets (Sun to Ketu) are Deva; but Nakshatra's are above Divya.

Manusmrith and other ancient texts calculations are complex, elaborated and long, mine are much final and simple calculation of those, I have distributed the calculation of rishi-munis in 40 finer parts which automatically proves the theory.

According to Manu-smriti and other ancient texts

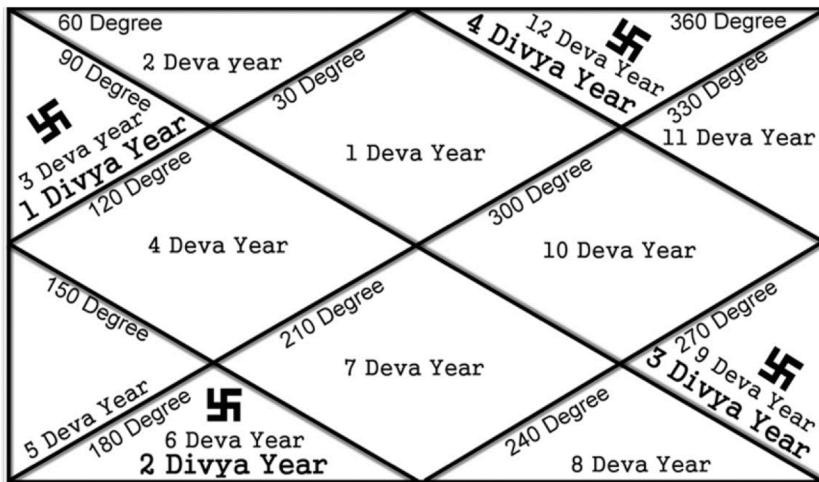
Yuga	Dev Year	Human Year	Total Age of Yuga (Era)	
Cycle of Satyug	4800 Year	x	360	1728000 Years
Cycle of Tretayug	3600 Year	x	360	1296000 Year
Cycle of Dwaparyug	2400 Year	x	360	864000 Year
Cycle of Kaliyug	1200 Year	x	360	432000 Year
Total	12000 Year	x	360	4320000 Years

According to my research duration of life of an individual human being is 108 years.,

9 heavenly bodies (mainly planets - Sun, Moon, Mars, Mercury, Jupiter Venus, Saturn, Rahu and ketu.) with the 12 houses of the Zodiac. 12 times 9 = 108.

9 Planets (Sun to Ketu) are owned and governed by three Nakshatra.

1 cycle of 27 Nakshatra equal to 90 degree, there are total 27 years at 90 degrees, This 90 degree cycle repeats itself four times to cover 360 degree equal to 108 Years.



No	Nakshatra	Planet	Degree	Year	(Dev) & Divine Year
1	Ashwini	Ketu	3.33	1	
2	Bharni	Venus	6.66	2	
3	Krittika	Sun	10	3	
4	Rohini	Moon	13.33	4	
5	Mrigshira	Mars	16.66	5	
6	Aadra	Rahu	20	6	
7	Punarvasu	Jupiter	23.33	7	
8	Pushya	Saturn	26.66	8	
9	Ashlesha	Mercuru	30	9	1 (Dev) Year
10	Magha	Ketu	33.33	10	

11	Purvaphalguni	Venus	36.66	11	
12	Uttaraphalguni	Sun	40	12	
13	Hasta	Moon	43.33	13	
14	Chitra	Mars	46.66	14	
15	Swati	Rahu	50	15	
16	Vishakha	Jupiter	53.33	16	
17	Anuradha	Saturn	56.66	17	
18	Jyestha	Mercuru	60	18	2 (Dev) Year
19	Mula	Ketu	63.33	19	
20	Purvashadha	Venus	66.66	20	
21	Uttarashadha	Sun	70	21	
22	Shrawana	Moon	73.33	22	
23	Dhanishtha	Mars	76.66	23	
24	Shatbhisha	Rahu	80	24	
25	Purvabhadra	Jupiter	83.33	25	
26	Uttarabhadra	Saturn	86.66	26	
27	Revati	Mercuru	90	27	3 (Dev) = 1 Divine Year

According to my Findings.

Yuga (Era)	Dev Year	Human Year		Total Age of Yuga
Cycle of Satyug	4800 Year	x	9	43200 Years
Cycle of Tretayug	3600 Year	x	9	32400 Year
Cycle of Dwaparyug	2400 Year	x	9	21600 Year
Cycle of Kaliyug	1200 Year	x	9	10800 Year
Total	12000 Year	x	9	108000 Years

Based on my findings 1 Mahayuga is of 108000 Human Years.
Note: All my findings are based on this calculated value.

Length of a Kalpa

Kalpa denotes a great period of time between the creation and recreation of a world or universe.

Lord Brahma's one day is called a kalpa, and each day (Sunrise to sunset) of Brahma is duration of one thousand Mahayugas. A Mahayugas comprises of one thousand of the four yugas. The same duration comprises his night (Sunset to Sunrise).

According to My Findings the value of 1 Mahayuga (Four Yuga) equal to 108000 years and Every Kalp has 1000 Mahayuga.

$$108000 \times 1000 = 108000000 \text{ Years} = 1 \text{ Kalps.}$$

1 Mahayug	1000	=	1 Kalp
108000	x	1000	= 108000000 (Human Year)

A kalpa is a single daytime period in the life of Brahma, Two kalpas are a day and a night of Brahma.

1 Kalp (Day)	+	1 Kalp (Night)	=	2 Kalp = 24 Hour.
108000000	+	108000000	=	216000000 (Human Year)

In Brahma's 360 Days = 1 year, there are 720 Kalp therefore Brahma's total Age of 108 years, consisting of 77760 kalp.

24 Hour	Days	Kalp	Total Age of Brahma	Kalp
2 Kalp	x	360 Days	= 720 Kalp	x 108 Years = 77760 Kalp

A year of Brahma is composed of 360 day/night cycles of Brahma, or 720 kalpas, or 77760000000 human years.

2 Kalp	360 Days (1 Year)	1 Year of Brahma
216000000	x 360	= 77760000000 Year

The lifespan of Brahma is 108 years, or 77760 kalpas, or 8398080000000 Human Year.

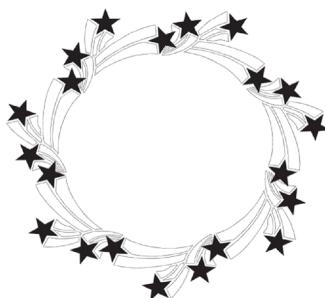
1 Year of Brahma	Year	Total Age of Brahma
77760000000 Year	x 108	= 8398080000000 Human Year

Total Age of Brahma	Kalp	Value of 1 Kalp
8398080000000	/ 77760	108000000

I have distributed the calculation of rishi-munis in 40 finer parts which automatically proves the theory.

The entire lifespan of Brahma may be measured thus.

	According to ancient texts	/	40	According to me
Total Age of Brahma	3110400000000000	/	40	8398080000000
1 Year of Brahma	3110400000000	/	40	77760000000
Value of 1 Kalp	4320000000	/	40	1080000000
Value of 1 Mahayug	4320000	/	40	108000
Value of 1 Satyug	1728000	/	40	43200
Value of 1 Tretayug	1296000	/	40	32400
Value of 1 Dwaparyug	864000	/	40	21600
Value of 1 Kaliyug	432000	/	40	10800



Manvantara

Manvantara is Antara of Manu. Seventy-one mahayugas make up a manvantara. Each Manvantara is created and ruled by a specific Manu, who in turn is created by Brahma, the Creator himself. Manu creates the world, and all its species during that period of time, each Manvantara lasts the lifetime of a Manu.

Fourteen (14) manvantaras make up a kalpa. In my findings 1 Kalp is of 108000000 Human Years = 1000 Mahayuga.

1 Kalp	1 Mahayug
108000000	/ 1000 Mahayug = 108000 Year

The Kalpa is divided into 14 Manvantaras = $71 * 14 = 994$ mahayug + 6 mahayug in form of sandhi Kaal, therefore 1 kalpa = 1000 maha yugas.

Kalp	Mahayug	Year
1 Kalp	= 1000 Mahayug	= 108000000
1 Manvantar	= 71 Mahayug	= 7668000
1 Kalp = 14 Manvantar	= 994 Mahayug	= 107352000

The value of Transit Period (Sandhi Kaal) of 2 Kalp's is 6 Mahayuga i.e. 648000 Human Years (Sandhi Kaal)

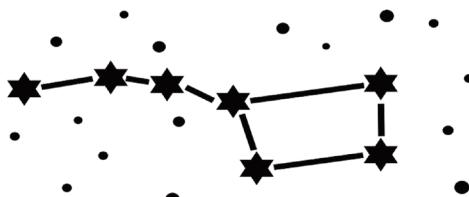
1 Kalp	Value of 14 Manvantar	Transition Period
108000000	- 107352000	= 648000

During the Transit Period (Sandhi Kaal) of 2 Kalp's on Earth it is the Period of Mahapralay and during this period the entire earth is submerged in water

To understand the calculation of Kalp/Manvantar/Mahayug and yuga the calculation of Saptrishi must be studied and understood.

Total Age of Brahma	Kalp	Value of 1 Kalp
8398080000000	/ 77760	108000000

Saptarshi (Big-Dipper)



"Saptarsi" or the "Seven Sages" representing the seven stars, they are close to one another and about the same brightness.

Saptarshi are useful navigation tool of universe.

According to ancient texts Saptarishis stays for 100 years (lifespan of human) in each of the 27 "Nakshatras" which adds up to a cycle of 2700 human years.

But based on my findings Saptarishis stays for 108 years (lifespan of human) in each of the 27 Nakshatra which adds up to a cycle of 2916 human years.

While considering the lifespan of Brahma as the age of Universe is only possible by Saptrishi (Big-Dipper) calculation.

Calculations of Saptrishi are given below.

1 Year of Brahma is equal to 77760000000 human years.

1 Year of Brahma / Cycle of saptrishi	77760000000 / 2916
Divisor (A)	2916
Dividend (A)	77760000000
Quotient (A)	26666666
Remainder. (A)	0.67
Next *	
Multiply the quotient and the divisor	
26666666 x 2916	77759998056
Next *	
Now Subtract with Dividend	
77760000000 - 77759998056	1944
Final difference	1944
Next *	

Final difference / 108 (Saptarshi Year)	1944 / 108
Divisor (B)	108
Dividend (B)	1944
Quotient (B)	18
Remainder. (B)	0
Quotient (B) 18th Nakshatra	
18th Nakshatra is Called JYESTHA	

Thus during Brahma's 0 year (Zero) Saptrishi were in Ashwini Nakshatra and end of 1 year age of Brahma = 720 Kalp was over, Saptrishi's were in Jyestha Nakshatra,

Thereafter again in the beginning of 2nd year of Brahma, Saptrishi were in base Nakshatra and every year = 720 Kalp later Saptrishi raised in the 19th Nakshatra.

Presently Brahma is in its 52 year. In the beginning of 52 years Saptrishi were in Ashwini Nakshatra.

Nakshatra	Ashwini	Moola	Magha	Ashwini	Moola	Magha	Ashwini	Moola	Magha
Year	1	2	3	4	5	6	7	8	9
Kalp	720	1440	2160	2880	3600	4320	5040	5760	6480
Year	10	11	12	13	14	15	16	17	18
Kalp	7200	7920	8640	9360	10080	10800	11520	12240	12960
Year	19	20	21	22	23	24	25	26	27
Kalp	13680	14400	15120	15840	16560	17280	18000	18720	19440
Year	28	29	30	31	32	33	34	35	36
Kalp	20160	20880	21600	22320	23040	23760	24480	25200	25920
Year	37	38	39	40	41	42	43	44	45
Kalp	26640	27360	28080	28800	29520	30240	30960	31680	32400
Year	46	47	48	49	50	51	52 ***		
Kalp	33120	33840	34560	35280	36000	36720			

According to this calculation let's find the position of Saptrishi in 28th Kaliyug. at the beginning of 52 years of Brahma Saptrishi rise in Ashwini Nakshatra.

From the start of present Kalp to present kaliyug total 49021200 Years has lapsed

Manvantae & Yuga	Year	
1 Mahayuga	=	108000
71 Mahayuga (1 Manvantar)	=	7668000

Manvantae & Yuga		Year			
6 Manvantar	=	46008000	/	6	7668000
27 Mahayug	x	2916000	/	27	108000
Satyug		43200			
Tretayug		32400			
Dwaparyug		21600			
Total		49021200			

Now above value (49021200 Years) / saptarshi 27 Nakshatra value 2916 .

Above value / Cycle of Saptrishi	49021200 / 2916
Divisor (C)	2916
Dividend (C)	49021200
Quotient (C)	16811
Remainder. (C)	0.11111
Next *	
Multiply the quotient and the divisor	
16811 x 2916	49020876
Next *	
Now Subtract with Dividend	
49021200 - 49020876	324
Final difference	324
Next *	
Final difference / 108 (Saptarshi Year)	324 / 108
Divisor (D)	108
Dividend (D)	324
Quotient (D)	3
Remainder. (D)	0
Quotient (D)3rd Nakshatra	
3rd Nakshatra is Called Krittika	

Thus from start of Ashwini and end of 49021200 years it was Krittika Nakshatra.

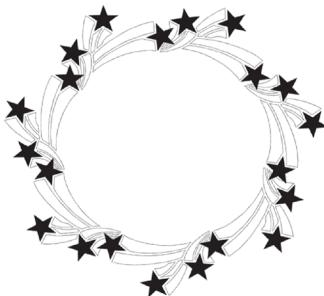
Therefore the present Kaliyug did not rise in Ashwini Nakshatra as believe and studied instead it's arose in Magha Nakshatra.

When the present Kaliyug started in Magha Nakshatra, then

during the beginning of Kalp Saptrishi rise is possible in Punarvasu Nakshatra only.

Theoretically saptrishi starts and ends in the same Nakshatra for example starts from Ashwini Nakshatra and end in Ashwini Nakshatra.

Presently Brahma is of 52 years and now it is the 4th day of 52 years. Accordingly present Kalp (7th Kalp) arose in Punarvasu Nakshatra.



Status of Magha Nakshatra in the 7th Kalp and present Kaliyug.

From the start of 7th Kalp to end of Dwaparyug total 697021200 Years have lapsed.

Manvantae & Yuga		Year			
6 Manvantar	=	46008000	/	6	7668000
27 Mahayug	x	2916000	/	27	108000
Satyug		43200			
Tretayug		32400			
Dwaparyug		21600			
Total		49021200			

Above value / Cycle of saptrishi	697021200 / 2916
Divisor (E)	2916
Dividend (E)	697021200
Quotient (E)	239033
Remainder. (E)	0.333333333
Next *	
Multiply the quotient and the divisor	
239033 x 2916	697020228
Next *	
Now Subtract with Dividend	
697021200 - 697020228	972
Final difference	972
Next *	
Final difference / 108 (Saptarshi Year)	972 / 108
Divisor (F)	108
Dividend (F)	972
Quotient (F)	9
Remainder. (F)	0
Quotient (F)9th Nakshatra	
9th Nakshatra is Called Ashlesha	

Thus from start of Punarvashu Nakshatra (7th kalp) and end of 697021200 years (Dwaparyug) it was Ashlesha Nakshatra, thereafter

Kaliyug Start with Magha Nakshatra. (697021201 years)

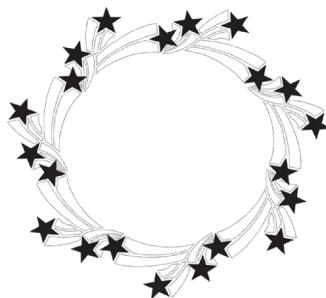
52 Year's	Nakshatra	Duration	Years	Div By.
1st Kalp	Ashwini	108000000	108000000	2916
2nd Kalp	Bharni	108000000	216000000	2916
3rd Kalp	Krittika	108000000	324000000	2916
4th Kalp	Rohini	108000000	432000000	2916
5th Kalp	Mrigshira	108000000	540000000	2916
6th Kalp	Aadra	108000000	648000000	2916
7th Kalp ****	Punarvasu			
6 Manvantar		46008000	694008000	2916
27 Mahayug		2916000	696924000	2916
Satyug		43200	696967200	2916
Tretayug		32400	696999600	2916
Dwaparyug		21600	697021200	2916

Start of Kalp & Manvantar	Nakshatra
Manvantar (1)	Punarvashu
Manvantar (2)	Shatbhisha
Manvantar (3)	Chitra
Manvantar (4)	Rohini
Manvantar (5)	Uttarashada
Manvantar (6)	Purvaphalguni
Current Manvantar (Mahayug 1)	Ashwini
Mahayug (2)	Bharani
Mahayug (3)	Krittika
Mahayug (4)	Rohini
Mahayug (5)	Mrigshira
Mahayug (6)	Aadra
Mahayug (7)	Punarvashu
Mahayug (8)	Pushya
Mahayug (9)	Ashlesha
Mahayug (10)	Magha
Mahayug (11)	Purvaphalguni
Mahayug (12)	Uttaraphalguni

Mahayug (13)	Hasta
Mahayug (14)	Chitra
Mahayug (15)	Swati
Mahayug (16)	Vishakha
Mahayug (17)	Anuradha
Mahayug (18)	Jyestha
Mahayug (19)	Moola
Mahayug (20)	Purvashadha
Mahayug (21)	Uttarashadha
Mahayug (22)	Shravana
Mahayug (23)	Dhanishtha
Mahayug (24)	Shatbhisha
Mahayug (25)	Purvabhadrapad
Mahayug (26)	Uttarabhadrapad
Mahayug (27)	Revati
Current Mahayug (28)	Ashwini

Saptarshi (Big-Dipper) in Current Mahayug

	According to me	Saptrishi	Start	End
Satyug	43200 Year	400 cycles	Ashwini	Shravana
Tretayug	32400 Year	300 cycles	Dhanishtha	Purvabhadra
Dwaparyug	21600 Year	200 cycles	Uttarabhadra	Ashlesha
Kaliyug	10800 Year	100 cycles	Magha	Ashwini

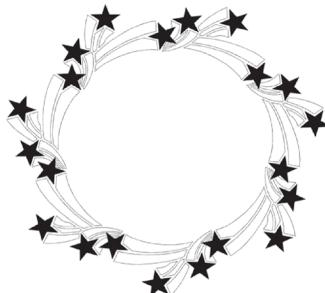


Kalp (Eon) and Satyuga Starts.

Based on my findings rule gives an fix year length of 365.2425944 days thus Current Kalp (Aeon) Starts on Sunday and Satyug on Wednesday, details are given below.

Yuga	Year		Value of 1 Year	Days
6 Manvantar + 27 Mahayug	48924000	/	365.2425944	17869128686
Satyug	43200	/	365.2425944	15778480.08
Tretayug	32400	/	365.2425944	11833860.06
Dwaparyug	21600	/	365.2425944	7889240.039
Kaliyug	10800	/	365.2425944	3944620.019
Ayanmansha (0)	3600	/	365.2425944	1314873.34

Start	Julian No	Date	Month	BC/AD	Day
Current Kalp	-17904000836	21	Mar.	49023196 BC	Sun
Satyug	-34872149.77	4	April	100188 BC	Wed.
Tretayug	-19093669.69	19/20	May	56989 BC	Sun/Mon
Dwaparyug	-7259809.629	22/23	Sept.	24590 BC	Wed/Thu
Kaliyug	629430.4096	15/16	April	2990 BC	Fri/Sat
Ayanmasha 0	1944303.75	20	Mar.	611AD	Sat



Length of a Year Precession cycle

Based on my findings rule gives an fix year length of 365.2425944 days and period of its complete Precession cycle take 21600 years. (21600 is Group of Holy Number 108.)

My ayanamsa date of zero is 20th March 611 A.D.

20 March 611 (Saturday)				
Chaitra Shukla Pratipada Start	11	15	33	AM
Ashwini Nakshatra Start	11	34	22	AM
Sun Transit in Aries	15	31	59	PM

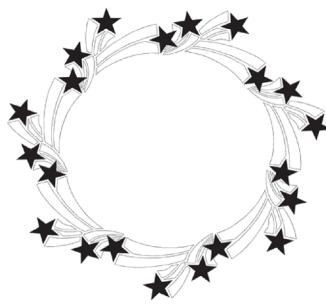
Comparison of 13 Ayanamsa

21-Mar-2018	Deg	Min	Sec
Yukteshwar	22	43	59
Raman	22	39	55
Surya siddhant	22	47	2
Pushya Paksh	22	58	36
J N Bhasin	23	0	59
Rohini Paksh	23	22	37
Abhishek Mishra**	23	27	0
Devdatta	23	44	4
KP	24	0	53
Jagannath	24	6	37
N C Lahiri	24	6	41
Chandrahari	24	50	11
Fagan	24	59	41

Abhishek mishra's Ayanamsa

Date	Month	Year	Degree
20	March	611	0:00:00
21	March	2000	23:09:00

21	March	2001	23:10:00
21	March	2002	23:11:00
21	March	2003	23:12:00
21	March	2004	23:13:00
21	March	2005	23:14:00
21	March	2006	23:15:00
21	March	2007	23:16:00
21	March	2008	23:17:00
21	March	2009	23:18:00
21	March	2010	23:19:00
21	March	2011	23:20:00
21	March	2012	23:21:00
21	March	2013	23:22:00
21	March	2014	23:23:00
21	March	2015	23:24:00
21	March	2016	23:25:00
21	March	2017	23:26:00
21	March	2018	23:27:00



Cyclical Destruction (Mahapralay)

The Cyclical Destruction of the World as we know it, occurs in events singularly known as a Pralaya that takes place at the end of a Mahayuga.

Kali Yuga began at midnight 15 / 16 April in 2990 BC, based on my findings above about Kaliuga periods.

5005 years are passed out of 10800 years of current Kali Yuga, and hence another 5795 years are left to complete this 28th Kali Yuga and current Mahayug of Vaivaswatha Manvantara.

In Brahma Vaivarta Puraan where Lord Krishna tells Goddess Ganga that she would be the source of cleaning mankind' sins in the first 5000 years (2010 AD) of Kaliyuga.

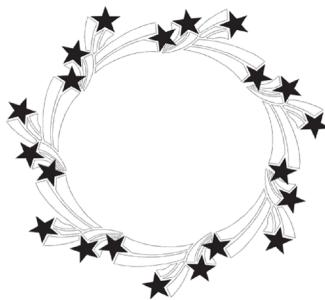
According to my research end of the world will happen in the next three years with a cataclysm of natural disasters, Floods, earthquakes and deadly plagues will finish all humanity and the civilised world as we know it. Now, we all are going to be gone.

3600 years after the passage of Kalyuga, on March 20th 611 AD March Equinox was (0 degrees). The Ayanans cycle comprises of $60 \text{ years} * 360 \text{ degrees} = 21600 \text{ years}$. Thus, as per this calculation, in every 21600 years March equinox will be (0 degrees). In accord with this, on March 21st 2018, Ayanans will be at 23.27 degrees and the inclination of the earth's axis too will be at 23.27 degrees. This inclined position of the earth will cause Mahapralaya/Jalpralaya. It is claimed that during or in 19583 BC, earth's axis was inclined at the same 23.27 degrees. Earth's inclination comes at 23.27 degrees in every 21600 years. This position causes dramatic changes in the weather. As per the astronomical calculations, five cycles of 21600 years, which equals 108000 years adds up to make a single Mahayuga. In every Mahayuga, there occurs a possibility of Mahapralaya, at least once. Five cycles of 21600 years makes up one Mahayuga. In every 108000 years there occurs Mahapralaya. In the present era of Mahayuga, we are in the second phase of Kaliyuga. As per the calculations, 5795 years are remaining for the completion of Kalyuga. By March 21st, 2018, when the earth will re-incline

itself at 23.27 degrees, the situation for Pralaya/Mahapralaya will arise. This condition will prevail till the very end of this particular cycle of Mahayuga. There remains only three years, from March 21st, 2015 to March 21st, 2018, for the earth to cover the inclination difference of 0.03 degrees and reach 23.27 degrees. It is predicated that in the mere time interval of three years, there will be massive destruction on planet earth. In the year 2015, geographical changes in the position of earth will start taking place. Natural disasters, earthquakes will be an everyday occurrence. The situation will worsen all the more in the year 2016. A highly significant change in the geographic position of earth will occur by March 21st 2018. As the earth proceeds to the inclination position of 23.27 degrees, vibrations in the crust of the earth will increase accordingly. At 23.27 degrees the possibility of a highly destructive Pralaya will arise. Every passing day will see changes in the weather condition, rivers will change their course and rampant changes in the position of North Pole and South Pole will occur in the course of these three years. The temperature on the surface of the earth will increase highly by the year 2018. This will cause melting of the glaciers/Himalayas. This in turn will increase the water level of the Oceans. The temperature of the Ocean will rise subsequently. Eventually, the outer surface of the earth will heat up and the temperature in the already burning inner crust of the earth will increase all the more. In face of all these climatic and environmental changes, by the year 2018, all the life on Earth will be destroyed owing to Flood/earthquakes/high temperature. The geographical changes on the planet earth will affect changes on the moon as well. At 23.27 degrees, the vibrations produced on the surface of the earth will affect the gravitational force. Because of this distortion in the gravitational force of the Earth, the possibility of collision with smaller planets will increase. This in turn will cause the production of energy greater than hundreds of atom bomb. This will cause complete destruction of the environment. The energy thus produced will further cause the meltdown of the glaciers and will cause the extinction of life on earth. The energy produced will cause the glaciers to melt

which will cause the glaciers to melt, which in turn will destroy life. 2015- 2016, beginning; 2017-2018- Middle; 2019-2020- End- this situation will prevail. From 2015 to 2020, Earth will be in complete imbalance. Earthquakes and high Temperatures will keep increasing in frequency. From the year 2021, Mid 2017-2018 will be highly destructive.

The instance of highly destructive event on earth (related to climatic changes) occurs in every 21600 years and Mahapralaya occurs in every $21600 \times 5 = 108000$ years. Such a destructive outcome occurs because of the vibrations produced on earth when it is inclined at 23.27 degrees. Events of massive destruction will begin occurring by March 2016. Undoubtedly, February-March 2016 will witness a high frequency of occurrences of natural disasters. Due to the distortion in the gravitational force of the earth, the possibility of collision of earth with smaller planets in solar system will be unduly high between 2016 and 2018. By the year 2016, only 5.366% will be remaining for the present cycle of Mahayuga and Kalyuga to end. The time period of one Mahayuga is 108000 years and at the end of this time period Mahapralaya occurs. The time period of Mahapralaya has already begun from March 21st 2015. In the mere time span of coming three years, life forms from the surface of earth will perish, but not completely.



Sun and Moon Revolution

Based on my findings the time taken by the sun to complete one revolution round the zodiac is 365.2425944 days. The moon completes one revolution round the zodiac in $365.2425944 / 13.33333333 = 27.39319458$ Days.

Sun, Earth and Moon Distance.

Sun and moon appear the same size in Earth's sky because the sun's diameter is about 432 times greater than moon and sun is also about 432 times farther away.

Distance from the Earth to the Moon is $1000 \times 360 = 360000$ (min) to 406656 (max) Km.

$$(360000) + (108 \times 432 = 46656) = 406656.$$

Thus Avarage Distance from the Earth to the Moon $(360000) + (46656 / 2 = 23328) 383328$ Km. And distance from the Earth to the Sun is $360000 \times 432 = 155520000$ Km.

Light travels at a speed

Based on my findings Light travels at a speed of 324000 kilometers per second, It takes $155520000 / 324000 = 480$ seconds for light to travel from the Sun to the Earth

	According to science	According to me
Distance of Sun From Earth	144900000 KM	155520000 KM
Ave Dis of Moon From Earth	384400 KM	383328 KM
Light Year	300000 KM Per Sec	324000 KM Per Sec
Sun Light Reach Earth	483 Second	480 Second
Value of 100 Yojan	1600 KM	36 KM

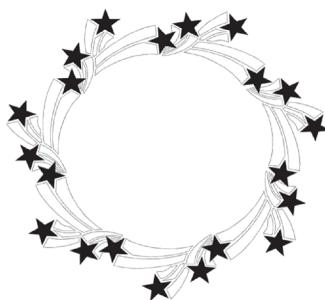
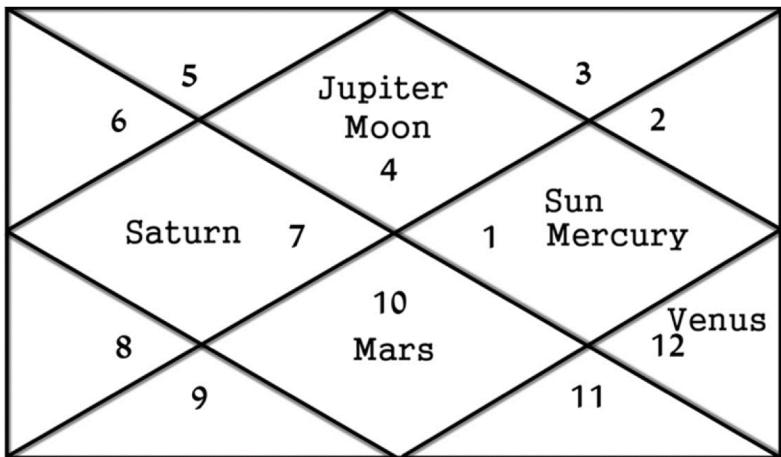
Lord Ram

Ram is the seventh and one of the most important avatars of Lord Vishnu.

Lord Ram was born in third phase of Tretayug, on the ninth lunar day of the Shuklapaksh of Chaitra Month on Tuesday, Sun, Mars, Jupiter, Venus and Saturn were in their respective exalted positions. Moon (own Sign) and Jupiter are in conjunction in Cancer. Sun and mercury conjunction in 10th house (Aries Sign).

Lord Ram was born on 14th June 33253 BC (Tuesday) in Ayodhya (India).

Horoscope of Lord Ram.



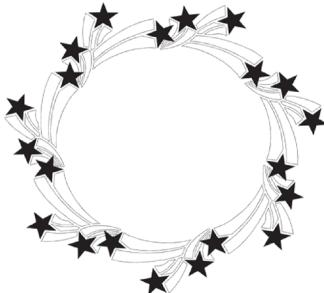
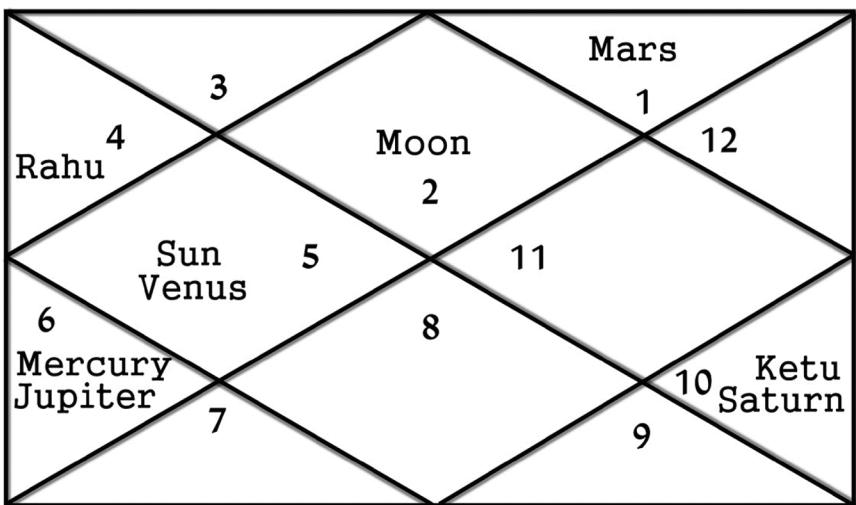
Lord Krishna

Krishna is one of the eight avatars of Lord Vishnu. Lord Krishna was born in the 4th Phase of Dwaparyug on (08 September -3249), Eighth day (Ashtami) of the Krishna Paksha (dark fortnight) of the month Bhadrapad (Chaitradi) Shravan (Kartikadi) at Midnight.

Birth time: Night. 11:59:59. Moon in Rohini Nakshatra.

Moon rise 11:35 PM, Moon set next day 12:29 PM.

Horoscope of Lord Krishna



Mahabharata War

Mahabharata War started in Bahudhanya Samvatsar (3159-3158) on 20th December 3159 BC. It was Margshirsh Shuklapaksh Ekadashi (Monday), on this date Lord Krishna's age was 32975 days.

Beginning of the Kali Yuga

The popularly accepted date for the beginning of the Kaliyuga with the death of Lord Krishna.

Aryabhatta had calculated on 17/18 February, 3102 BC as the starting point of the Kali Yuga with the death of Lord Krishna.

But based on my findings Lord Krishna was born on 8th September 3249 BC, and it was on April 10, 3123 (Tuesday) BC that Krishna breathed his last, after living 45870 days (125 years 214.6757 days)

As per my findings with Astronomical calculation kalyug starts on 15/16 April 2990 and Ayanmansha was zero on 20 march 611 AD, exactly after 3600 years from the kalyuga.

Thus Aryabhatta made an error in his back calculations.

Lord Gautam Buddha

Parikshit was the grandson of Arjuna, He was born after the end of the Mahabharat War, Yudhistira gave the crown to Arjuna's grandson Parikshit about 36 years after the Mahabharat War, Parikshit ruled Hastinapur for 24 years and died at the age of sixty. Parikshit having been bitten to death by Thaklshaka Naga (Snake) Janmejaya was crowned as the next king after Parikshit. on 1st April -573 BC (Wednesday) 2526 years after Janmejaya coronation Lord Gautam Buddha was born. Buddha's father King Suddhodana was the leader of Shakya clan, Gautama Buddha also known as Shakyamuni, Buddhist Era (Shaka Kaal) started with Buddha's birth on 1st April -573 BC.

On his birth day it was Vaishakh Shuklapaksh Purnima (Buddha Jayanti)



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with

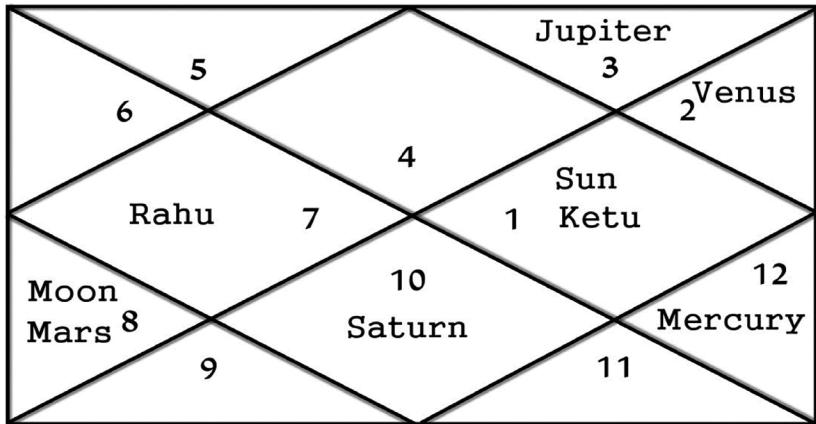


By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

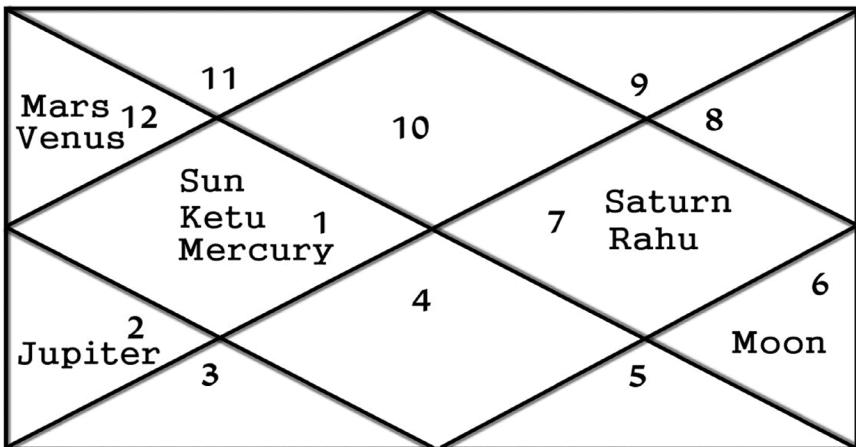
Horoscope of Lord Gautam Buddha



Lord Mahavir

Lord Mahavir was born on the 13th lunar day of the Shuklapaksh of Chaitra Month on Monday. Lord Mahavir was born on 21st March 610 BC (Monday).

Horoscope of Lord Mahavira



Abhishek Mishra

Contact no. 077-3939-5656 / 088-777-44-888

Taranager-Massipirhi, Hazaribag – 825301

E-mail: kaalsutrabhishekam@outlook.com

Sunday, September 27, 2015